संत श्री आसारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

हिन्दी

मूल्य : रु. ६/-
१ सितम्बर २०१०
वर्ष : २० अंक : ३
(निरंतर अंक : २१३)

आत्मसाक्षात्कार दिवस
९ अक्टूबर

परम पूज्य
संत श्री आसारामजी बापू

हिमालय पर्वत में भी वह शीतलता नहीं, समुद्र में भी वह गहनता नहीं, देवताओं के अमृत में भी वह मधुरता नहीं, जो अपने आत्मस्वरूप में है। उसीका चिंतन, उसीमें विश्रांति तुम्हारे जीवन को पूर्ण बना देगी।

जीवन का परम लक्ष्य : आत्मसाक्षात्कार

- पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से

पूज्य बापूजी के आत्मसाक्षात्कार-दिवस ९ अक्टूबर पर विशेष

आज के दिन जितना हो सके आप लोग मौन का सहारा लेना। यदि बोलना ही पड़े तो बहुत धीरे बोलना और बार-बार अपने मन को समझाना कि 'तेरा आसोज सुद दो दिवस कब होगा ? ऐसे दिन कब आयेंगे जिस क्षण तू परमात्मा में खो जायेगा ? ऐसी घड़ियाँ कब आयेंगी जब सर्वव्यापक, सच्चिदानंद परमात्मस्वरूप हो जायेंगे ? ऐसी घड़ियाँ कब आयेंगी जब निःसंकल्प अवस्था को प्राप्त हो जायेंगे ?

योगी दिव्य शरीर पाने के लिए योग करते हैं, धारणा करते हैं लेकिन वह दिव्य शरीर भी प्रकृति का होता है और अंत में नाश हो जाता है। मुझे न दिव्य भोग भोगने हैं, न लोक-लोकांतर में विचरण करना है, न दिव्य देव-देह पाकर विलास करना है। मैं तो सत्, चित्, आनंदस्वरूप हूँ, मेरा मुझको नमस्कार है। ऐसा मुझे कब अनुभव होगा ? जो सबके भीतर-बाहर चिद्घनस्वरूप है, सबका आधार है, सबका प्यारा है, सबसे न्यारा है, ऐसे उस सच्चिदानंद परमात्मा में मेरा मन विश्रांत कब होगा ?'

दीर्घ ॐकार जपते-जपते मन को विश्रांति की तरफ ले जाना। ज्यों-ज्यों मन विश्रांति को उपलब्ध होगा, त्यों-त्यों तुम्हारा तो बेड़ा पार हो ही जायेगा साथ ही तुम्हारा दर्शन करनेवाले का भी बेड़ा पार हो जायेगा।

योग की पराकाष्ठा दिव्य देह पाना है, भक्ति की पराकाष्ठा भगवान के लोक में जाना है, धर्म-अनुष्ठान की पराकाष्ठा स्वर्ग-सुख भोगना है लेकिन साक्षात्कार की पराकाष्ठा अनंत-अनंत ब्रह्माण्डों में फैल रहा जो चैतन्य है, जिसमें कोटि-कोटि ब्रह्मा होकर लीन हो जाते हैं, जिसमें कोटि-कोटि इन्द्र राज्य करके विनष्ट हो जाते हैं, जिसमें अरबों-खरबों राजा उत्पन्न होकर लीन हो जाते हैं उस चैतन्यस्वरूप के साथ अपने-आपका ऐक्य अनुभव करना है। यह साक्षात्कार की कुछ खबरें हैं। साक्षात्कार कैसा होता है उसको वाणी में नहीं लाया जा सकता।

धर्म में, भक्ति में, योग में और साक्षात्कार में क्या अंतर है यह समझना चाहिए। योग मन और इन्द्रियों को शुद्ध करने में एवं हर्ष और शोक को दबाने के काम आता है। धर्म अधर्म से बचने के काम आता है। भक्ति भाव को शुद्ध करने के काम आती है। भोग हर्ष पैदा करने के काम आते हैं। लेकिन साक्षात्कार इन सबसे ऊँची चीज है।

आसोज सुद दो दिवस, संवत् बीस इक्कीस । मध्याह्न ढाई बजे, मिला ईस से ईस ॥
देह सभी मिथ्या हुई, जगत हुआ निस्सार । हुआ आत्मा से तभी, अपना साक्षात्कार ॥

धर्म से स्वर्ग आदि की उपलब्धि होती है, स्वर्ग में जाना पड़ता है। भक्ति से वैकुंठ अथवा अपने-अपने उपास्य के लोक में सुख लेने के लिए जाना पड़ता है। योग से दिव्य देह पाने के लिए प्रयत्न करना पड़ता है। लेकिन साक्षात्कार सारे कर्तव्य छुड़ा देता है।

ब्राह्मी स्थिति प्राप्त कर, कार्य रहे ना शेष । मोह कभी न ठग सके, इच्छा नहीं लवलेश ॥
पूर्ण गुरु किरपा मिली, पूर्ण गुरु का ज्ञान ।....

सारे कर्तव्य, भोक्तव्य की प्रीति को पार कर अपने सहज-सुलभ आत्मानंद में मस्त हैं।

ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलगू, कन्नड़, अंग्रेजी व सिंधी भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २० अंक : ३
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २१३)
१ सितम्बर २०१० मूल्य : रु. ६-००
भाद्रपद-आश्विन वि.सं. २०६७

स्वामी : संत श्री आसारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
प्रकाशन स्थल : संत श्री आसारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात).
मुद्रण स्थल : विनय प्रिंटिंग प्रेस, ''सुदर्शन'', मिठाखली अंडरब्रिज के पास, नवरंगपुरा, अहमदाबाद- ३८०००९ (गुजरात).
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में

(१) वार्षिक : रु. ६०/-
(२) द्विवार्षिक : रु. १००/-
(३) पंचवार्षिक : रु. २२५/-
(४) आजीवन : रु. ५००/-

नेपाल, भूटान व पाकिस्तान में

(सभी भाषाएँ)

(१) वार्षिक : रु. ३००/-
(२) द्विवार्षिक : रु. ६००/-
(३) पंचवार्षिक : रु. १५००/-

अन्य देशों में

(१) वार्षिक : US $ 20
(२) द्विवार्षिक : US $ 40
(३) पंचवार्षिक : US $ 80

ऋषि प्रसाद (अंग्रेजी)	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारत में	७०	१३५	३२५
अन्य देशों में	US $20	US $40	US $80

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजा करें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('ऋषि प्रसाद' के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

सम्पर्क पता

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात).
फोन नं. : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८.
e-mail : ashramindia@ashram.org
web-site : www.ashram.org

इस अंक में...

विभिन्न टी.वी. चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

A2Z NEWS	care WORLD	दिशा	JUS one (अमेरिका)
रोज सुबह ५-३० व ७-३० बजे तथा रात्रि १०-०० बजे	रोज सुबह ७-०० बजे	रोज सुबह ८-१० बजे	सोम से शुक्र शाम ७ बजे, शनि-रवि शाम ७-३० बजे

✻ A2Z चैनल रिलायंस के 'बिग टीवी' पर भी उपलब्ध है। चैनल नं. 425
✻ care WORLD चैनल 'डिश टीवी' पर उपलब्ध है। चैनल नं. 770
✻ दिशा चैनल 'डिश टीवी' पर उपलब्ध है। चैनल नं. 757
✻ JUS one चैनल 'डिश टीवी' (अमेरिका) पर उपलब्ध है। चैनल नं. 581

प्रीति और स्मृति

(पूज्य बापूजी की अमृतवाणी)

प्रीति और स्मृति में अंतर है। देखो, जिससे प्रीति होती है उसकी स्मृति सतत बनी रहे यह कोई जरूरी नहीं है। बेटे के लिए प्रीति होती है और कामकाज करते हैं तो क्या दिन भर बेटे की स्मृति करते हैं ? गहरी नींद में सो जाते हैं तो मैं कौन हूँ ? कहाँ हूँ ? बेटा कहाँ है ? - ये सब बातें विस्मृति की खाई में चली जाती हैं। फिर भी हृदय की गहरी कंदरा में अपने प्रिय की स्मृति बनी रहती है। सुबह उठे तो कामकाज में लगे लेकिन बेटे का फोन आया या बेटा आ गया तो आपकी प्रीति उभर आती है। स्मृति तो करनी पड़ती है लेकिन प्रीति एक बार हो जाय तो बनी रहती है। तो जिसको अपना मानते हैं उसमें प्रीति स्वाभाविक होती है। बेटे को अपना मानते हैं, वस्तु को अपनी मानते हैं... किसीके जूते पड़े हैं, कुत्ता उन पर पिचकारी लगा रहा है तो उसे हम नजरअंदाज कर देते हैं। लेकिन अपने जूते पर जब कुत्ता पिचकारी लगाने लगता है तो हम हटाते हैं क्योंकि जूता अपना है। तो जो अपनी चीज होती है, अपना जिसको मानते हैं उसमें प्रीति होती है।

मैं आपको हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ कि आप भगवान को अपना मानिये। वास्तव में भगवान आपके थे, हैं और रहेंगे। शरीर आपका पहले नहीं था, बचपन आपका नहीं था इसीलिए नहीं रहा। बचपन कौन-से दिन चला गया, बताओगे तुम ? जवानी भी आपकी नहीं है, नहीं रहेगी। बुढ़ापा भी आपका नहीं है। शरीर भी आपका नहीं है। आपका हो तो आपके कहने में रहे। आप नहीं चाहते कि यह बीमार हो जाय, नहीं चाहते मर जाय, नहीं चाहते बूढ़ा हो जाय तो भी हो जाता है। तो शरीर माया का है, प्रकृति का है, संसार का है। इसको संसार की सेवा में, कर्तव्य में लगा दो किंतु आपका आत्मा-परमात्मा है। वह एकरस है, नित्य है, सुखस्वरूप है, ज्ञानस्वरूप है, चेतनस्वरूप है, सत्स्वरूप है। आपका बचपन असत् था, उसको जाननेवाला सत् अभी भी है - 'बचपन में मैं ऐसा था, वैसा था...' वह आपका परमात्मा ज्ञानस्वरूप है। आपकी बुद्धि में ज्ञान उसीसे आता है। वह आपका परमात्मा आनंदस्वरूप है इसीलिए हृदय में कभी-कभी प्रेम, खुशी, आनंद आता है। उस परमात्मा को अपना मान लो। जो सत् है, चेतन है, आनंदस्वरूप है, वह मेरा आत्मा-परमात्मा है। जो बदलनेवाला है दुःख-सुख, वह मेरा नहीं है। मनुष्य ने यह ठान लिया है कि हमको जो मिलेगा उसको पकड़े रहेंगे। कोई छुड़ायेगा तो हम रोयेंगे। 'यह मिल गया, अब मेरा है। लेकिन यह देखते-देखते सड़ जायेगा, गल जायेगा फिर मुझे रोना पड़ेगा। जो आ गया वह आ गया, उसका उपयोग किया परंतु जिसकी सत्ता से आया, जिसको दिखा वह आत्मा चैतन्य मैं हूँ। जो दिखा वह मेरा नहीं है, जो मिला वह मेरा नहीं है किंतु मिला हुआ जिससे दिखा वह सच्चिदानंद प्रभु मेरा है।' - ऐसा चिंतन करने से आपके दुःख ऐसे मिटेंगे जैसे सूरज उगते ही अंधकार मिट जाता है। आपको दुःख और सुख स्वप्नवत् दिखेंगे और उनको जाननेवाला परमेश्वर अपना महसूस होगा। प्रभु

ऐसा नहीं कि कहीं से आयेंगे, घूमकर दर्शन देंगे और चले जायेंगे । वह उपासना के अंतर्गत है, भावना के बल से है, वह प्रभु का अवतार आयेगा, जायेगा किंतु प्रभु तो वास्तव में सर्वत्र, सर्वव्यापक हैं और आपके आत्मा हैं । अंतर्यामी प्रभु इधर (हृदय में) होंगे तभी तो बाहर के मंदिर के प्रभु दिखेंगे अथवा आये हुए प्रभु दिखेंगे । आये हुए प्रभु तो चले जायेंगे किंतु जिससे दिखेंगे वे प्रभु कभी नहीं जाते ।

तो भगवान में प्रीति बनी रहे । प्रीति में स्मृति की शर्त नहीं है । स्मृति जब प्रीति बन जाती है, स्मृति जब अपनत्व दिखाती है फिर स्मृति की भी आवश्यकता नहीं रहती । भगवान कहते हैं :

मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः संगवर्जितः ।
निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव ॥

'हे अर्जुन ! जो पुरुष केवल मेरे ही लिए सम्पूर्ण कर्तव्यकर्मों को करनेवाला है, मेरे परायण है, मेरा भक्त है, आसक्तिरहित है और सम्पूर्ण भूतप्राणियों में वैरभाव से रहित है, वह अनन्य भक्तियुक्त पुरुष मुझको ही प्राप्त होता है ।'

(गीता : ११.५५)

हे अर्जुन ! जो पुरुष केवल मेरे लिए ही सम्पूर्ण कर्तव्य-कर्मों को करनेवाला है... माँ से मधुर व्यवहार, पत्नी का पालन अथवा पति की सेवा या बेटों का पालन, ये मुझे सुख देंगे - इस भावना से नहीं अपितु अब संसार में फँसे हैं तो भगवान के निमित्त कर्तव्य करते हैं - इस भावना से करें । तो भगवान के परायण होकर जो कर्म करता है, भगवान कहते हैं कि वह मेरा भक्त है । जिसके कर्म भगवान के निमित्त हों, जो आसक्तिरहित और सम्पूर्ण भूतप्राणियों में वैरभाव से रहित हो, वह मनुष्य, अनन्य भावयुक्त पुरुष मुझको (भगवान को) ही प्राप्त हो जाता है । एक तो **मत्कर्मकृत्** । भगवान के लिए कर्म । दूसरा **मत्परमः** । भगवान का ही भरोसा । भगवान के निमित्त कर्म और भगवान का भरोसा । 'बुढ़ापे में क्या होगा ? क्या खायेंगे ?' अरे, माँ के गर्भ से आये तब उस परमात्मा ने हमारे लिए दूध बना दिया तो बुढ़ापे में भी कुछ-न-कुछ हो जायेगा । क्यों चिंता करके मरो !

मुर्दे को प्रभु देत है, कपड़ा लकड़ा आग ।
जिंदा नर चिंता करे, ताके बड़े अभाग ॥

मद्भक्तः... मेरे में भक्ति । भगवान का 'मैं' अर्थात् जहाँ से 'मैं-मैं' स्फुरता है । 'मैं, यह, वह' सब भूल जाते हैं लेकिन वास्तविक 'मैं' ज्यों-का-त्यों रहता है । **मद्भक्तः...** मेरे में भक्ति, मेरे में प्रीति, मेरे में भरोसा तथा दूसरे से ममता नहीं और वैर नहीं । आदमी या तो ममता से फँसता है या तो वैर से फँसता है । भगवान के निमित्त कर्म करने से तो फँसान छूट जाती है ।

तो रति भी भगवान में, प्रीति भी भगवान में । भगवान की महत्ता जान के उनको अपना जानें तो उनमें हमारी प्रीति स्वाभाविक है । बिना प्रीति के कोई व्यक्ति रह नहीं सकता । **प्रीति जब मूल में (परमात्मा में) नहीं होती और विकारों के द्वारा भटकती है तो वह संसार बन जाती है और प्रीति निर्विकार नारायण के प्रति होकर व्यवहार करते हैं तो प्रीति भक्ति के रूप में चमकती है ।** भगवान सत्स्वरूप हैं उससे हमारा अस्तित्व है । भगवान चेतनस्वरूप हैं उससे जीव की बुद्धि में चेतना है और भगवान आनंदस्वरूप हैं इसीलिए जीवों को किसी-न-किसीके प्रति प्रीति है । अगर जीव वह प्रीति नाम में, रूप में, आकृति में, वस्तु में ही आबद्ध कर लेता है तो संसार में फँसता है किंतु नाम में, रूप में, वस्तु में जिसके आधार से प्रीति होती है उस उद्गम-स्थान का सुमिरन करता है अथवा उसमें प्रीति करता है तो निर्लेप ब्रह्मज्ञानी संत बन जाता है । ❑

झूठे का मुँह काला, सच का बोलबाला...

राजेश सोलंकी की असलियत उजागर

ठगी व धोखाधड़ी में माहिर राजेश सोलंकी ने साजिश के तहत मीडिया द्वारा आश्रम पर झूठे आरोप लगाये। न्यायाधीश श्री डी.के. त्रिवेदी जाँच आयोग में उससे २ दिन तक चली पूछताछ में दूध-का-दूध और पानी-का-पानी हो गया।

पैसों के लालच और प्रसिद्धि की चाह में राजेश ने ऐसी कहानियाँ बनाकर कहीं, जिनका सत्य से दूर-दूर तक कोई लेना-देना नहीं था। उसने मीडिया में कहा : 'मैं भी आसारामजी के नजदीक था। १९९१ से १९९७ तक मैं आश्रम में रहा हूँ। मैं बापूजी का अंगद सेवक था। मैं उनकी डायरी लिखता था। उनके निजी कार्य करता था। मैं बापूजी के साथ दूसरे राज्यों में भी जाता था। बापूजी क्या करते थे, यह मुझे पता रहता और मैं उसका साक्षी बनता था।' - ऐसा कहकर उसने आश्रम पर तांत्रिक विधि करने आदि के झूठे आरोप भी लगाये।

कैमरों के सामने बैठकर झूठी बकवास करनेवाले राजेश को जब न्यायाधीश का सामना करना पड़ा तो उसने सच्चाई अपने मुँह से ही उगल दी। राजेश ने स्वीकार किया : 'मैं कभी भी बापूजी के किसी भी आश्रम में रहा नहीं हूँ। मैंने किसी भी दिन आश्रम में सेवा नहीं की है। तांत्रिक विद्या क्या है ? इस बारे में मैं कुछ नहीं जानता। किसीके ऊपर तांत्रिक विद्या हुई हो तो ऐसा व्यक्ति मैंने कभी देखा नहीं है।'

राजेश ने मीडिया में एक और झूठी कहानी कही थी : 'मेरी पत्नी बकुला को सूरत आश्रम में कैद करके रखा है। वह मार्च २००८ से मेरे घर से चली गयी थी। बकुला ने स्नातक की परीक्षा में संस्कृत विषय में गोल्डमेडल प्राप्त किया है। बकुला की मौसी जशोदा बहन सूरत आश्रम के बाहर फूल बेचने का कार्य पिछले पन्द्रह वर्षों से करती है। बकुला भी उसके साथ आश्रम में आती-जाती थी। तांत्रिक गुलाब लल्लू भाई चौहान ने मुझे कहा कि तुम तुम्हारी पत्नी को हमेशा के लिए भूल जाओ। तुम्हारी पत्नी की मदद से अहमदाबाद में दो बालकों के ऊपर तांत्रिक विधि की गयी है।'

उपरोक्त विषय में प्रश्न पूछे जाने पर राजेश ने स्वीकार करते हुए कहा : 'मैं मेरी पत्नी के साथ कभी बापूजी के सूरत आश्रम में नहीं गया हूँ। मेरी पत्नी भी खुद अकेली कभी आश्रम में नहीं गयी है। मेरी पत्नी बकुला मुझे छोड़कर चली गयी। उसके बाद मैंने किसी भी दिन बापूजी के किसी भी आश्रम में उसकी खोजबीन नहीं की है। बकुला बापूजी के आश्रम में रहती है, ऐसा भी मुझे किसीके द्वारा जानने को नहीं मिला है। यह बात सत्य है कि मैंने बकुला की मौसी जशोदा बहन को कभी भी सूरत आश्रम के बाहर फूल बेचते हुए नहीं देखा है। बकुला के संस्कृत में गोल्डमेडलिस्ट होने का प्रमाणपत्र मैंने आज तक नहीं देखा है। अहमदाबाद के बच्चों की घटना के बारे में मुझे कोई जानकारी नहीं है।'

एक महिला से ७०,००० रुपये की ठगी के मामले में राजेश ने स्वीकारा कि 'मैं और मेरे मित्र महेन्द्र के विरुद्ध पुलिस में शिकायत दर्ज हुई। न्यायालय ने दो वर्ष की सजा सुनायी और मैं जेल में रहा।' १३,००० व १५,००० रुपये की ठगी के अन्य दो मामलों में राजेश ने स्वीकार करते हुए कहा : 'यह बात सत्य है कि दोनों मामलों में पुलिस-शिकायत होने पर पुलिस द्वारा मुझे रिमांड पर भी लिया गया। पुलिस-जाँच के बाद मेरे विरुद्ध आरोप-पत्र भी दाखिल हुआ है।'

राजेश ने कबूल किया कि 'मेरी पत्नी ने मेरे विरुद्ध मानसिक पीड़ा देने की पुलिस में शिकायत की। इस मामले में मैं न्यायिक हिरासत में १९५ दिन नवसारी (गुज.) जेल में रहा। अभी जमानत पर छूटा हूँ।'

न्यायाधीश के समक्ष राजेश द्वारा मीडिया को
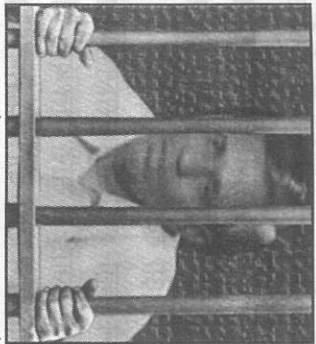
दिये गये इंटरव्यू की विडियो सी.डी. दिखाई गयी, जिसमें राजेश कपटी अमृत प्रजापति के साथ बैठकर पवित्र, निर्दोष संत पूज्य बापूजी के बारे में मनगढ़ंत, अनर्गल बातें कह रहा है। इस विषय में राजेश ने कहा कि 'इस इंटरव्यू में मेरे मुख से जो बातें बापूजी के विरुद्ध निकली हैं, वैसी कोई भी बात मैंने मेरे बयान में कही नहीं है। मीडिया ने मेरे बयान की सी.डी. में छेड़छाड़ की है। मेरे से ऐसा झूठा इंटरव्यू क्यों लिया गया, इसकी मैं जाँच करना चाहता हूँ।' इस वक्तव्य से राजेश की धूर्तता जगजाहिर हो गयी और वह हँसी का पात्र बन गया।

राजेश सोलंकी ने बकुला बहन से शादी भी धोखाधड़ी करके की थी। बकुला बहन से डेढ़ दिन तक चली पूछताछ में उसने कहा : 'शादी के पूर्व राजेश ने मुझे तथा मेरे परिवारवालों से कहा कि वह दाहोद (गुज.) में डिप्टी कलेक्टर की नौकरी करता है परंतु जब मैं ससुराल आयी तो देखा कि वह कभी नौकरी पर गया ही नहीं। वह झूठ बोलता और जब मैं सत्य जानने का प्रयत्न करती तो वह सही जवाब नहीं देता था। राजेश शंकालु और झगड़ालू प्रकृति का था और सास-ससुर व देवरानी के सामने भी मुझे प्रतिदिन मारता-पीटता व गंदी गालियाँ देता था। अतः राजेश को छोड़ने के बाद मैं मौसी के यहाँ रहती हूँ व प्लास्टिक की फैक्टरी में नौकरी करती हूँ। मैं गोल्डमेडलिस्ट नहीं हूँ। संस्कृत का कोई श्लोक मुझे याद नहीं है, मैंने वशीकरण का कोई मंत्र कभी पढ़ा नहीं है। तांत्रिक विद्या क्या है ? उसकी मुझे कोई जानकारी नहीं है। मुझे आश्रम में किसीने भी कैद करके कभी नहीं रखा है। मैं कभी भी किसी आश्रम में रही नहीं हूँ। मैंने पूज्य बापूजी का सूरत या अन्य कोई आश्रम आज तक देखा नहीं है। आश्रम के साथ हमारा कोई सम्पर्क नहीं है। राजेश ने मेरे बारे में, आश्रम व बापूजी के विषय में मीडिया में भी झूठे बयान दिये हैं, जिससे मुझे उस पर विश्वास नहीं है।'

जशोदा बहन ने पूछताछ में बताया : 'मैंने कभी भी सूरत आश्रम के बाहर फूल बेचने का कार्य नहीं किया है।'

गुलाब लल्लूभाई चौहान ने पूछताछ में बताया : 'मैं आज तक कभी पूज्य बापूजी के किसी भी आश्रम में नहीं रहा हूँ। मैं तांत्रिक विद्या के बारे में कुछ भी जानता नहीं हूँ। मैं अपने परिवार के साथ घर में रहता हूँ और नौकरी करता हूँ। राजेश सोलंकी ने आश्रम तथा मेरे बारे में मीडिया में झूठे बयान दिये हैं।'

बकुला बहन ने राजेश सोलंकी के सामने ही उसकी तरफ इशारा करते हुए न्यायाधीश से कहा : 'साहब, यह चीटर (धोखेबाज) है।'

समाज को गुमराह और भ्रमित करनेवाले ठग राजेश सोलंकी की भी अंततः असलियत उजागर हो ही गयी, जिससे अब वह किसीको मुँह दिखाने के लायक भी नहीं रहा।

झूठे का मुँह काला, सच का बोलबाला।

ऐसे ही राजू चांडक की चालबाजी, धूर्तता, गोली लगवाने का नाटक और गोली लगने की झूठी, नाटकीय बयानबाजी को भी पुलिस और लोग जानने लगे हैं। मूल साजिशकर्ताओं के इन पिट्ठुओं को पुलिस व समाज जानने लग गया है।

जिन्होंने भारत के गौरव की सुवास पूरे विश्व में महकायी, ऐसे विश्ववंदनीय महापुरुष के बारे में चालबाज, महाधूर्त, महाठग राजेश सोलंकी, अमृत वैद्य और राजू चांडक जैसे लोगों की झूठी बकवासबाजी को मिर्च-मसाला लगा के तूल देकर दिखाया-छापा गया, प्रचारित-प्रसारित किया गया, क्या यह भारत की जनता के साथ घोर अन्याय नहीं है ? **(क्रमशः)** ❑

असली पारस

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

संत नामदेवजी की पत्नी का नाम राजाई था और परीसा भागवत की पत्नी का नाम था कमला। कमला और राजाई शादी के पहले सहेलियाँ थीं। दोनों की शादी हुई तो पड़ोस-पड़ोस में ही आ गयीं। राजाई नामदेवजी जैसे महापुरुष की पत्नी थी और कमला परीसा भागवत जैसे देवी के उपासक की पत्नी थी। कमला के पति ने देवी की उपासना करके देवी से पारस माँग लिया और वे बड़े धन-धान्य से सम्पन्न होकर रहने लगे। नामदेवजी दर्जी का काम करते थे। वे कीर्तन-भजन करने जाते और पाँच-पन्द्रह दिन के बाद लौटते। अपना दर्जी का काम करके आटे-दाल के पैसे इकट्ठे करते और फिर चले जाते। वे अत्यंत दरिद्रता में जीते थे लेकिन अंदर से बड़े संतुष्ट और खुश रहते थे।

एक दिन नामदेवजी कहीं कीर्तन-भजन के लिए गये तो कमला ने राजाई से कहा कि 'तुम्हारी गरीबी देखकर मुझे तरस आता है। मेरा पति बाहर गया है; तुम यह पारस ले लो, थोड़ा सोना बना लो और अपने घर को धन-धान्य से सम्पन्न कर लो।'

राजाई ने पारस लिया और थोड़ा-सा सोना बना लिया। संतुष्ट व्यक्ति की माँग भी आवश्यकता की पूर्ति भर होती है। ऐसा नहीं कि दस टन सोना बना ले, एक-दो पाव बनाया बस।

नामदेवजी ने आकर देखा तो घर में सीधा-सामान, धन-धान्य... भरा-भरा घर दीखा। शक्कर, गुड़, घी आदि जो भी घर की आवश्यकता थी वह सारा सामान आ गया था।

नामदेवजी ने कहा : ''इतना सारा वैभव कहाँ से आया ?'' राजाई ने सारी बात बता दी कि ''परीसा भागवत ने देवी की उपासना की और देवी ने पारस दिया। वे लोग खूब सोना बनाते हैं और इसीलिए दान भी करते हैं, मजे से रहते हैं। हम दोनों बचपन की सहेलियाँ हैं। मेरा दुःख देखकर उसको दया आ गयी।''

नामदेवजी ने कहा : ''मुझे तुझ पर दया आती है कि सारे पारसों का पारस ईश्वर है, उसको छोड़कर तू एक पत्थर लेकर पगली हो रही है। चल मेरे साथ, उठा ये सामान !''

नामदेवजी बाहर गरीबों में सब सामान बाँटकर आ गये। घर जैसे पहले था ऐसे ही खाली-खट कर दिया।

नामदेवजी ने पूछा : ''वह पत्थर कहाँ है ? लाओ !'' राजाई पारस ले आयी। नामदेवजी ने उसे ले जाकर नदी में फेंक दिया और कहने लगे 'मेरे विट्ठल, पांडुरंग ! हमें अपनी माया से बचा। इस धन-दौलत, सुख-सुविधा से बचा, नहीं तो हम तेरा, अंतरात्मा का सुख भूल जायेंगे।' - ऐसा कहते-कहते वे ध्यानमग्न हो गये।

स्त्रियों के पेट में ऐसी बड़ी बात ज्यादा देर नहीं ठहरती। राजाई ने अपनी सहेली से कहा कि ऐसा-ऐसा हो गया। अब सहेली कमला तो रोने लगी। इतने में परीसा भागवत आया, पूछा : ''कमला ! क्या हुआ, क्या हुआ ?''

वह बोली : ''तुम मुझे मार डालोगे ऐसी बात है।'' आखिर परीसा भागवत ने सारा रहस्य समझा तो वह क्रोध से लाल-पीला हो गया। बोला : ''कहाँ है नामदेव, कहाँ है ? कहाँ गया मेरा पारस, कहाँ गया ?'' और इधर नामदेव तो

नदी के किनारे ध्यानमग्न थे।

परीसा भागवत वहाँ पहुँचा : ''ओ ! ओ भगतजी ! मेरा पारस दीजिये।''

नामदेव : ''पारस तो मैंने डाल दिया उधर (नदी में)। परम पारस तो है अपना आत्मा। यह पारस पत्थर क्या करता है ? मोह, माया, भूत-पिशाच की योनि में भटकाता है। पारस-पारस क्या करते हो भाई ! बैठो और पांडुरंग का दर्शन करो।''

''मुझे कोई दर्शन-वर्शन नहीं करना।''

''हरि ॐ बोलो, आत्मविश्रांति पाओ।''

''नहीं चाहिए आत्मविश्रांति, आप ही पाओ। मेरे जीवन में दरिद्रता है, ऐसा है, वैसा है... मुझे मेरा पारस दीजिये।''

''पारस तो नदी में डाल दिया।''

''नदी में डाल दिया ! नहीं, मुझे मेरा वह पारस दीजिये।''

''अब क्या करना है... सच्चा पारस तो तुम्हारा आत्मा ही है। अरे, सत्य आत्मा है...''

''मैं आपको हाथ जोड़ता हूँ मेरे बाप ! मुझे मेरा पारस दो... पारस दो...।''

''पारस मेरे पास नहीं है, वह तो मैंने नदी में डाल दिया।''

''कितने वर्ष साधना की, मंत्र-अनुष्ठान किये, सिद्धि आयी, अंत में सिद्धिस्वरूपा देवी ने मुझे वह पारस दिया है। देवी का दिया हुआ वह मेरा पारस...''

नामदेवजी तो संत थे, उनको तो वह मार नहीं सकता था। अपने-आपको ही कूटने लगा।

नामदेवजी बोले : ''अरे, क्या पत्थर के टुकड़े के लिए आत्मा का अपमान करता है !''

'जय पांडुरंगा !' कहकर नामदेवजी ने नदी में डुबकी लगायी और कई पत्थर ला के रख दिये उसके सामने।

''आपका पारस आप ही देख लो।''

देखा तो सभी पारस !

''इतने पारस कैसे !''

''अरे, कैसे-कैसे क्या करते हो, जैसे भी आये हों ! आप ले लो न अपना पारस !''

''ये कैसे पारस, इतने सारे !''

नामदेवजी बोले : ''अरे, आप अपना पारस पहचान लो।''

अब सब पारस एक जैसे, जैसे रुपये-रुपये के सिक्के सब एक जैसे। आपने मुझे एक सिक्का दिया, मैंने फेंक दिया और मैं वैसे सौ सिक्के ला के रख दूँ और बोलूँ कि आप अपना सिक्का खोज लो तो क्या आप खोज पाओगे ?

उसने एक पारस उठाकर लोहे से छुआया तो वह सोना बन गया। लोहे की जिस वस्तु को लगाये वह सोना !

''ओ मेरी पांडुरंग माऊली (माँ) ! क्या आपकी लीला है ! हम समझ रहे थे कि नामदेव दरिद्र हैं। बाप रे ! हम ही दरिद्र हैं। नामदेव तो कितने वैभवशाली हैं। नहीं चाहिए पारस, नहीं चाहिए, फेंक दो। ओ पांडुरंग !''

परीसा भागवत ने सारे-के-सारे पारस नदी में फेंक दिये और परमात्म-पारस में ध्यानमग्न हो गये।

ईश्वर जिस ध्यान में हैं, ब्रह्मा, विष्णु, महेश जिस ध्यान में हैं, तुम वहाँ पहुँच सकते हो। अपनी महिमा में लग जाओ। आपका समय कितना कीमती है और आप कौन-से कूड़-कपट और क्रिया-कलापों में उलझ रहे हो !

अभी आप बंधन में हो, मौत कभी भी आकर आपको ले जा सकती है और किसीके गर्भ में ढकेल सकती है। गर्भ न मिले तो नाली में बहने को आप मजबूर होंगे। चाहे आपके पास कितने भी प्रमाणपत्र हों, कुछ भी हो, आपके आत्मवैभव के आगे यह दुनिया कोई कीमत नहीं रखती।

जब मिला आतम हीरा,

जग हो गया सवा कसीरा। □

लालबहादुर ही क्यों ?

(लालबहादुर शास्त्री जयंती : २ अक्टूबर)

लालबहादुर शास्त्रीजी के बाल्यकाल की एक घटना है। एक दिन वे सोचने लगे कि परिवार में सभी लोगों का नाम प्रसाद व लाल पर है लेकिन माँ ने मेरा नाम 'बहादुर' क्यों रखा।

बालक माँ के पास गया और बोला : ''माँ ! मेरा नाम लालबहादुर क्यों रखा है, जबकि हमारे यहाँ तो किसीका नाम बहादुर पर नहीं है ? अपने रिश्तेदारों में भी तो सभी लाल या प्रसाद हैं, फिर मेरा नाम इतना खराब क्यों है ? मुझे यह नाम अच्छा नहीं लगता।''

पास ही बैठे उनके मामा ने कहा : ''क्यों नहीं है, देखो इलाहाबाद के नामी वकील हैं तेज बहादुर।''

तभी माँ रामदुलारी देवी हँसीं और बोलीं : ''नन्हे का नाम 'वकील बहादुर' बनने के लिए तुम्हारे जीजाजी ने नहीं रखा है बल्कि उन्होंने 'कलम बहादुर' बनाने के लिए और मैंने अपने नन्हे को 'करम बहादुर' बनाने के लिए इसका नाम 'लालबहादुर' रखा है। मेरा लाल 'बहादुर' बनेगा अपनी हिम्मत व साहस का....।''

और इतना कहते-कहते उनकी आँखें डबडबा आयीं। पति की स्मृति उनके मानस-पटल पर आ गयी। उन्होंने अपने 'लालबहादुर' को गोद में बैठाकर अनेकानेक आशीष दे डाले। ये ही आशीर्वाद जेल-जीवन की यातनाओं तथा पारिवारिक समस्याओं में उनका साहस बढ़ाते रहे। माता के आशीर्वाद फलीभूत हुए और इतिहास साक्षी है कि वे सहनशीलता, शालीनता, विनम्रता और हिम्मत में कितने बहादुर हुए। उनका धैर्य, साहस, संतोष तथा त्याग असीम था।

बाल्यावस्था बहुत नाजुक अवस्था होती है, इसमें बच्चों को आप जैसा बनाना चाहते हैं वे वैसे बन जायेंगे। आवश्यकता है तो बस अच्छे संस्कारों के सिंचन की।

लालबहादुर एक बार बालमित्रों के साथ मेला देखने जा रहे थे। उनके पास नाविक को देने के लिए पैसे नहीं थे। स्वाभिमान के धनी 'लाल' यह बात किसीको कैसे बताते ! वे गंगाजी की वेगवती धारा में कूद पड़े और तैरकर ही उस पार पहुँच गये।

एक बार लालबहादुर शास्त्री इलाहाबाद की नैनी जेल में थे। घर पर उनकी बेटी पुष्पा बीमार थी और गम्भीर हालत में थी। साथियों ने उन पर दबाव डाला कि 'आप घर जाकर बेटी की देखभाल करें।' वे राजी भी हो गये। उनका पेरोल भी मंजूर हो गया परंतु उन्होंने उस पेरोल पर छूटने से मना कर दिया क्योंकि उसके अनुसार उन्हें यह लिखकर देना था कि वे जेल के बाहर आंदोलन के समर्थन में कुछ न करेंगे। उधर बेटी जीवन और मौत की लहरों में गोते खाने लगी, इधर शास्त्रीजी अपने स्वाभिमान पर दृढ़ थे। आखिर जिलाधीश इनकी नैतिक, चारित्रिक दृढ़ता से इतना प्रभावित हुआ कि उसने इन्हें बिना किसी शर्त के मुक्त कर दिया।

शास्त्रीजी घर पहुँचे पर उसी दिन बेटी ने शरीर छोड़ दिया। शास्त्रीजी अग्नि-संस्कार करके लौटे। घर के भीतर किसीसे मिलने भी नहीं गये, सामान उठाकर ताँगे में बैठ गये। लोगों ने बहुत कहा : ''अभी तो पेरोल बहुत बाकी है।'' शास्त्रीजी ने उत्तर दिया : ''मैं जिस कार्य के लिए पेरोल पर छूटा था, वह खत्म हो गया है। अतः सिद्धांततः अब मुझे जेल जाना चाहिए।'' और वे जेल चले गये। □

जीवन-संजीवनी

- श्री परमहंस अवतारजी महाराज

✽ भोजन सत्त्वगुणी, हलका और कम खाओ तो श्वास सरलता से चलेंगे और भजन में सहयोग प्राप्त होगा।

✽ शारीरिक रोग अथवा कष्ट तो गुरुमुख पर भी आते हैं लेकिन वह मालिक (ईश्वर) के नाम में इतना लवलीन रहता है कि उसे दुःखों का आभास ही नहीं होता।

✽ गुरुमति का मूल्य है मनमति का त्याग। इसके बिना भक्तिमार्ग में सफलता प्राप्त करना असम्भव है।

✽ किसीकी भी निंदा न करो क्योंकि उससे तुम्हारी भी हानि होगी। तुम्हारे सब शुभ कर्मों का फल उसके पास चला जायेगा जिसकी तुम निंदा कर रहे हो।

✽ जिस सेवक का सद्गुरु के चरणों में प्रेम है वह नाम का अभ्यास करे। नाम का अर्थ है 'मैं' नहीं हूँ। संतों का फरमान है कि भगवान को अहंकार नहीं सुहाता। जहाँ नाम होगा वहाँ अहंकार नहीं होगा। सेवक को अपनी सुरति नाम से ऐसी जोड़नी चाहिए कि केवल 'तू-ही-तू' रह जाय और 'मैं-मैं' भूल जाय, इसीको कहते हैं सच्चा प्रेम।

✽ आत्मिक लाभ-हानि की पूर्ण जानकारी सद्गुरु को होती है। जीव की प्रायः यही दशा होती है कि थोड़ा भजन या सेवा करके स्वयं को कुछ समझने लगता है, इसलिए हानि की ओर जाता है और समझता यही है कि मैं लाभ की ओर जा रहा हूँ। यदि हृदय में दीनता धारण करोगे तो सुरक्षित रहोगे।

✽ जिसको प्रभुप्राप्ति की अभिलाषा हो, उसे अन्य सभी इच्छाएँ त्याग देनी चाहिए।

✽ यदि स्वयं को प्रेम-रंग में रँगना चाहते हो तो पहले मोह-ममता की मैल को सत्संगरूपी सरोवर पर जाकर धोओ।

✽ सुमिरन में महान शक्ति है। जैसे लोहा लोहे से काटा जाता है, उसी प्रकार नाम के सुमिरन से अन्य सभी मायावी विचारों को काट दो।

✽ घण्टे-दो घण्टे-तीन घण्टे भजन-नियम करके शेष समय सेवा, सत्संग, स्वाध्याय में अपने मन को लगाकर मालिक से दिल का तार जोड़े रखोगे तो आत्मिक शांति बनी रहेगी।

✽ जिस मनरूपी शत्रु ने कई जन्मों में तुम्हें धोखा दिया है, उस पर विश्वास न करो। गुरुशब्द पर दृढ़ विश्वास करके उस पर विजय प्राप्त कर लो।

✽ जो बीती सो बीती, शेष श्वास मालिक को अर्पण करो।

✽ शांति के अमृत से जीवन को मधुर बनाओ।

✽ जैसे परीक्षा के दिन निकट आने पर बालक अधिक पढ़ाई करते हैं, वैसे ही सेवक को भी चाहिए कि जैसे-जैसे जीवन के दिन व्यतीत होते जायें, वैसे-वैसे अभ्यास के लिए समय और पुरुषार्थ बढ़ाता चले।

✽ मन का सुमिरन करने का स्वभाव तो है ही, फिर क्यों न उससे लाभ उठाया जाय। जैसे चलती हुई रेल का काँटा बदलने से रेल एक ओर से दूसरी ओर चली जाती है, इसी प्रकार मन के सुमिरन का काँटा विषय-विकारों से बदलकर नाम-सुमिरन में लगाया जायेगा तो चौरासी से बचकर परम पद को प्राप्त करोगे।

✽ पूर्ण एकाग्रता से सुमिरन करो तो अथाह शक्ति उपलब्ध होगी। सांसारिक दुःख आपके सम्मुख ठहर ही नहीं सकेंगे।

✽ सदैव प्रसन्न रहने का प्रयत्न करो। प्रसन्नता सदा सत्पुरुषों की संगति से ही मिलती है। ☐

बड़ों के सम्मान का शुभ फल

कुरुक्षेत्र के मैदान में कौरव-पाण्डव दोनों दल युद्ध के लिए एकत्र हो गये थे। सेनाओं ने व्यूह बना लिये थे। वीरों के धनुष चढ़ चुके थे। युद्ध प्रारम्भ होने में कुछ क्षणों की ही देर जान पड़ती थी। सहसा धर्मराज युधिष्ठिर ने अपना कवच उतारकर रथ में रख दिया। अस्त्र-शस्त्र भी रख दिये और रथ से उतरकर वे पैदल ही कौरव सेना में भीष्म पितामह की ओर चल पड़े।

बड़े भाई को इस प्रकार शस्त्रहीन हो के शत्रु सेना की ओर पैदल जाते देखकर अर्जुन, भीमसेन, नकुल और सहदेव भी अपने रथों से उतर पड़े। वे लोग युधिष्ठिर के पास पहुँचे और उनके पीछे-पीछे चलने लगे। श्रीकृष्णचन्द्र भी पाण्डवों के साथ ही चल रहे थे। भीमसेन, अर्जुन आदि बड़े चिंतित हो रहे थे। वे पूछने लगे : ''महाराज ! आप यह क्या कर रहे हैं ?''

युधिष्ठिर ने किसीको कोई उत्तर नहीं दिया। श्रीकृष्णचन्द्र ने सबको शांत रहने का संकेत करके कहा : ''धर्मात्मा युधिष्ठिर सदा धर्म का ही आचरण करते हैं। इस समय भी वे धर्माचरण में ही स्थित हैं।''

उधर कौरव-दल में बड़ा कोलाहल मच गया। लोग कह रहे थे : ''युधिष्ठिर डरपोक हैं। वे हमारी सेना देखकर डर गये हैं और भीष्म की शरण में आ रहे हैं।'' कुछ लोग यह संदेह भी करने लगे कि पितामह भीष्म को अपनी ओर कर लेने की यह कोई चाल है। सैनिक प्रसन्नतापूर्वक कौरवों की प्रशंसा करने लगे।

युधिष्ठिर सीधे भीष्म पितामह के समीप पहुँचे और उन्हें प्रणाम करके हाथ जोड़कर बोले :

''पितामह ! हम लोग आपके साथ युद्ध करने को विवश हो गये हैं। इसके लिए आप हमें आज्ञा और आशीर्वाद दें।''

भीष्म बोले : ''भरतश्रेष्ठ ! यदि तुम इस प्रकार आकर मुझसे युद्ध की अनुमति न माँगते तो मैं तुम्हें अवश्य पराजय का शाप दे देता। अब मैं तुम पर प्रसन्न हूँ। तुम विजय प्राप्त करो। जाओ, युद्ध करो। तुम मुझसे वरदान माँगो। पार्थ ! मनुष्य धन का दास है, धन किसीका दास नहीं। मुझे धन के द्वारा कौरवों ने अपने वश में कर रखा है, इसीसे मैं नपुंसकों की भाँति कहता हूँ कि अपने पक्ष में युद्ध करने के अतिरिक्त तुम मुझसे जो चाहो वह माँग लो, युद्ध तो मैं कौरवों के पक्ष से ही करूँगा।''

युधिष्ठिर ने केवल पूछा : ''आप अजेय हैं, फिर आपको हम लोग संग्राम में किस प्रकार जीत सकते हैं ?''

पितामह ने उन्हें दूसरे समय आकर यह बात पूछने को कहा। वहाँ से धर्मराज द्रोणाचार्य के पास पहुँचे और उन्हें प्रणाम करके उनसे भी युद्ध के लिए अनुमति माँगी। आचार्य द्रोण ने भी वही बातें कहकर आशीर्वाद दिया परंतु जब युधिष्ठिर ने उनसे उनकी पराजय का उपाय पूछा, तब आचार्य ने स्पष्ट बता दिया : ''मेरे हाथ में शस्त्र रहते मुझे कोई मार नहीं सकता परंतु मेरा स्वभाव है कि किसी विश्वसनीय व्यक्ति के मुख से युद्ध में कोई अप्रिय समाचार सुनने पर मैं धनुष रखकर ध्यानस्थ हो जाता हूँ। उस समय मुझे मारा जा सकता है।''

युधिष्ठिर द्रोणाचार्य को प्रणाम करके कृपाचार्य

के पास पहुँचे। प्रणाम करके युद्ध की अनुमति माँगने पर कृपाचार्य ने भीष्म पितामह के समान ही सब बातें कहकर आशीर्वाद दिया किंतु अपने उन कुलगुरु से युधिष्ठिर उनकी मृत्यु का उपाय पूछ नहीं सके। यह दारुण बात पूछते-पूछते दुःख के मारे वे अचेत हो गये। कृपाचार्य ने उनका तात्पर्य समझ लिया था। वे बोले : ''राजन्! मैं अवध्य हूँ, किसीके द्वारा भी मैं मारा नहीं जा सकता परंतु मैं वचन देता हूँ कि नित्य प्रातःकाल भगवान से तुम्हारी विजय के लिए प्रार्थना करूँगा और युद्ध में तुम्हारी विजय का बाधक नहीं बनूँगा।''

इसके बाद युधिष्ठिर मामा शल्य के पास प्रणाम करने पहुँचे। शल्य ने भी पितामह भीष्म की बातें ही दुहराकर आशीष दिया, साथ ही उन्होंने यह वचन भी दिया कि युद्ध में अपने निष्ठुर वचनों से कर्ण को हतोत्साहित करते रहेंगे।

गुरुजनों को प्रणाम करके, उनकी अनुमति और विजय का आशीर्वाद लेकर युधिष्ठिर भाइयों के साथ अपनी सेना में लौट आये। उनकी इस विनम्रता ने भीष्म, द्रोण आदि के हृदय में उनके लिए ऐसी सहानुभूति उत्पन्न कर दी, जिसके बिना पाण्डवों की विजय अत्यंत दुष्कर थी।

आज का समस्याओं से भरा जटिल जीवन आम आदमी को किसी संग्राम से कम प्रतीत नहीं होता। यदि इसमें सुख-शांति की सरिता बहानी हो तो सत्संग की इस ज्ञानधारा से, इस ऐतिहासिक प्रसंग से प्रेरणा लेकर हमें भी अपने गुरुजनों का, बड़ों का सम्मान करना सीख लेना चाहिए। □

अत्याचारी की कीमत !

जिसके जीवन में धर्म नहीं है, परदुःखकातरता नहीं है, संतों-महापुरुषों का, माता-पिता का, सद्गुरु का आदर-सत्कार करने का, उनकी आज्ञा में चलकर मानव-जन्म सफल बनाने का सद्गुण नहीं है, सत्संग नहीं है, सत्शास्त्रों का पठन-मनन नहीं है तो उसके जीवन की कोई कीमत नहीं। अमूल्य मानव-जन्म पाकर यदि अपने जन्म-जन्मांतरों के बंधन काटनेवाला सत्संग नहीं सुना; स्वार्थ में, 'मैं-मेरे' की भावना में ही अटका रहा, केवल एक शरीर को ही सब कुछ मानकर उसीकी सुख-सुविधा के पीछे जीवन बर्बाद करता रहा तो वह मनुष्य के रूप में पशु माना गया है।

मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।

एक बार तैमूरलंग ने बहुत-से गुलाम पकड़े। उन गुलामों को बेचने के लिए वह स्वयं मोल-भाव करता था। सौदा तय होने पर बेच देता था। उसके द्वारा पकड़े हुए गुलामों में एक बार तुर्किस्तान के दार्शनिक अहमदी भी थे। उसने उनसे पूछा : ''बताइये, पास में खड़े इन दो गुलामों की कीमत क्या होगी ?''

अहमदी ने कहा : ''ये समझदार मालूम होते हैं, इनकी कीमत चार हजार अशर्फी से कम नहीं हो सकती।''

तैमूरलंग ने फिर प्रश्न किया : ''अच्छा ! बताइये, मेरी कीमत क्या होगी ?''

कुछ सोचकर अहमदी बोले : ''दो अशर्फी !''

तैमूरलंग गुस्से से तमतमा उठा। गरजकर बोला : ''मेरा अपमान ! इतने पैसों की तो केवल मेरी चादर ही है।''

दार्शनिक ने तैमूर के तमतमाते चेहरे को देखकर कहा : ''यह कीमत मैंने तुम्हारी चादर देखकर ही बतायी है, तुम्हारे जैसे अत्याचारी की कीमत तो एक छदाम (पुराने पैसे का चौथाई भाग) भी नहीं हो सकती।''

दार्शनिक अहमदी के इन ओजपूर्ण वचनों ने उसको कुछ सोचने के लिए मजबूर कर दिया और उसने उनको बंधनमुक्त कर दिया। □

हम दुःखी क्यों हैं ?

(पूज्य बापूजी की बोधमयी अमृतवाणी)

लोग बोलते हैं हम दुःखी हैं, दुःखी हैं, दुःखी हैं लेकिन वेदांत कहता है दुःख का वजन कितना है ? ५० ग्राम, १०० ग्राम, २०० ग्राम, किलो, आधा किलो ? दुःख का कोई वजन देखा ? नहीं। दुःख का रंग क्या है ? कोई भी रंग नहीं। दुःख का रूप क्या है ? रूप भी कोई नहीं। दुःख की ताकत कितनी है ? उसकी अपनी ताकत भी कुछ नहीं। दुःख ईश्वर के पास भी नहीं है, दुःख हम चाहते भी नहीं हैं फिर भी हम दुःखी हैं। दुःख ईश्वर ने बनाया नहीं, दुःख प्रकृति ने बनाया नहीं। माँ बच्चे के लिए दुःख बनाती है क्या ? फिर बच्चे दुःखी क्यों होते हैं ? नासमझी से। स्कूल जाने में फायदा है लेकिन माँ वहाँ ले जाती है तो दुःखी होते हैं, क्यों ? बेवकूफी से। स्नान करने में फायदा है, माँ स्नान कराती है, साबुन लगाने से उनका मैल कटता है लेकिन ऊँऽऽऽ करते हैं। दुःखी होते हैं। तो नासमझी के सिवाय दुःख का न रंग है, न रूप है, न वजन है।

दो प्रकार की दुनिया होती है। एक होती है - ईश्वर की दुनिया, उसमें दुःख नहीं है। दूसरी दुनिया हम बेवकूफी से बनाते हैं। जैसे हीरा-मोती, माणिक - ये ईश्वर ने बनाये लेकिन 'ये हीरे, मोती, माणिक इसके पास हैं, मेरे पास नहीं हैं...' यह सोचकर दूसरा दुःखी हो रहा है। किंतु जिसके पास हैं वह भी तो छोड़कर मरेगा। तेरे पास होंगे तो तू भी छोड़कर मरेगा। अभी तू अंतरात्मा, परमात्मा को धन्यवाद दे कि खाने को है, रहने को है, ये पत्थर नहीं हैं तो क्या है, होंगे तो क्या है ! उसके पास हैं तो उसे अहंकार हो रहा है कि 'मेरे पास हीरे हैं, मोती हैं, माणिक हैं।' वह अहंकार से फँस रहा है और तू बेवकूफी से फँस रहा है। ईश्वर की सृष्टि में न हीरे दुःख देते हैं, न सुख देते हैं। ईश्वर तो कई रूप, कई रंग, कई प्रसंग पैदा करके तुम्हें आह्लादित करते हैं, आनंदित करते हैं, तुम्हारा ज्ञान बढ़ाते हैं, तुम्हारी प्रीति बढ़ाते हैं, तुम्हारी भक्ति बढ़ाते हैं। तुम जन्म लेकर माँ की गोद में आये तो तुम्हारे लिए दूध माँ ने नहीं बनाया, बाप ने नहीं बनाया, बाप-के-बाप ने भी नहीं बनाया। माँ तो रोटी-सब्जी खाती है लेकिन तुम्हारे आने से पहले ही भगवद्सत्ता ने शरीर में दूध बना दिया। जब चाहिए, जितना चाहिए सकुर, सकुर, सकुर पिया, फिर मुँह घुमा दिया। वह जूठा नहीं माना जाता, गर्म नहीं करना पड़ता, फ्रिज में नहीं रखना पड़ता। यह किसने बनाया ? परम दयालु की सत्ता ने ही तो बनाया। न ज्यादा ठंडा न ज्यादा गर्म, न ज्यादा मीठा न ज्यादा फीका, यह इतना बढ़िया, अनुकूल दूध किसी जड़ मशीन ने बनाया कि चेतन परमात्मा की सत्ता से बना ? बोलो ! किसी दुश्मन ने बनाया कि परम हितैषी ने बनाया ? बोलो न ! यह हमारे हितैषी ईश्वर ने बनाया, समझदारी से बनाया, करुणा से बनाया। भगवान कभी-कभी अनुकूलता देते हैं तो हमें उत्साहित करते हैं और कभी प्रतिकूलता देते हैं तो हमें सावधान करते हैं कि हेकड़ी न लाओ। कभी बीमारी देते हैं कि बदपरहेजी न करो और कभी तंदुरुस्ती देते हैं कि सेवा करो, भजन करो, मुझे पहचानो। तो बताओ भगवान दुःख देते हैं कि उन्नति देते हैं ? भगवान हमारे

हितैषी हैं कि हमारे दुश्मन हैं ? हितैषी हैं। जब भगवान हमारी उन्नति चाहते हैं, हमारे हितैषी हैं, हम भी उन्नति चाहते हैं, अपना हित चाहते हैं फिर भी दुःख है तो क्यों है ? क्योंकि हम भगवान की हाँ-में-हाँ नहीं करते। हम अपनी बेवकूफी से भगवान को अपने ढंग से चलाना चाहते हैं - ऐसा कर दे, ऐसा कर दे, ऐसा हो जाय, ऐसा हो जाय... सिनेमा में अच्छा महल, माड़ियाँ, बगीचे दिखते हैं। अब देखनेवाला बोले : 'बस, यही दिखते रहें।' नहीं, वे हटेंगे फिर सड़क दिखेगी, चोर भी दिखेंगे, डाकू भी दिखेंगे, अच्छे लोग भी दिखेंगे, नाचनेवाले भी दिखेंगे, लवर-लवरियाँ भी दिखेंगे। ये सारे सिनेमा के बदलते हुए दृश्य हैं। अब कोई बोले : 'ये नहीं आयें, ऐसा ही हो, यह रुका रहे।' तो तुम्हारे कहने से रुकेगा नहीं, थमेगा नहीं और चाहो कि चला जाय तो जायेगा नहीं। यह तो फिल्म है तुम्हें आह्लादित करने के लिए, आनंदित करने के लिए, सूझबूझ बढ़ाने के लिए।

तो भगवान ने तो शास्त्र बनाये। ज्ञान का, भक्ति का, सत्कर्म का मार्ग बनाया। गुरुमंत्र पाने का सौभाग्य उपलब्ध किया। भगवान तो हमारा हित चाहते हैं। अब हम फिल्म देखें, कूड़-कपट करें, शराब पियें, जुआ खेलें, दूसरे की निंदा करें तो हम ही तो दुःख बनाते हैं न !

तो दुःख का कोई रूप नहीं, दुःख का कोई रंग नहीं, दुःख का कोई वजन नहीं। बेवकूफी का नाम है दुःख। नासमझी का नाम है दुःख। दुराग्रह का नाम है दुःख।

कोई मरता है तो उसका दुःख नहीं लेकिन यदि उसके साथ 'यह मेरा है' की मान्यता है तो दुःख होता है। कोई जन्मता है तो उसका सुख नहीं किंतु 'यह मेरे घर जन्मा है।' - यह मान्यता जुड़ी है तो सुख होता है। तो हम शरीर को 'मैं' मानते हैं और संबंधों को 'मेरा' मानते हैं पर 'मैं' जहाँ से स्फुरित होता है उस आत्मा-परमात्मा को मेरा मानें और संसार को सपना मानें, यथायोग्य व्यवहार करें तो बहुत खुशी रहती है, आनंद रहता है। 'ये हीरे मेरे हैं, ये मोती मेरे हैं, यह मकान मेरा है...' अरे, यह है उसके पहले किसीके पास था, बाद में किसीके पास रहेगा। जिस जमीन को अपनी मानते हो वह पहले किसीकी थी और तुम्हारे मरने के बाद या पहले किसी दूसरे की हो जायेगी। तो 'ये चीजें मेरी हैं।' नहीं, मेरी मानना ऊपर से, अंदर से समझो कि 'यह सब सपना है। इसको जाननेवाला मेरा प्रभु अपना है। मरने के बाद भी जो साथ नहीं छोड़ता वह प्रभु अपना है।' इस प्रकार का ज्ञान आने से सदा आनंद है।

तो दुःख भगवान ने नहीं बनाया लाली ! लाले ! दुःख प्रकृति ने नहीं बनाया भैया ! बहनजी ! आसक्ति, अविद्या, अस्मिता, राग-द्वेष इन्हींसे दुःख होता है। अविद्या मिटेगी तत्त्वज्ञान से, राग-द्वेष मिटेगा ईश्वर की उपासना, ध्यान से। बस, हो गयी ईश्वर की प्रीति, परमानंद की प्राप्ति !

दुःख परमात्मा ने नहीं बनाया और दुःख तुम चाहते नहीं ! बेवकूफी का दूसरा नाम है दुःख और बेवकूफी मिटती है सत्संग से, सत्संग से विवेक जगता है।

बिनु सतसंग बिबेक न होई।
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई॥

(श्री रामचरित. बा.कां. : २.४)

भगवान की सामान्य कृपा हुई तो मनुष्य-जन्म मिला। भगवान की विशेष कृपा हुई तो श्रद्धा हुई और गुरु मिले। भगवान की और विशेष कृपा हुई तो गुरुमंत्र की दीक्षा मिली और भगवान प्यारे लगने लगे। भगवान प्यारे लगने लगे तो देर-सवेर उस दुलारे का ज्ञान भी प्रकट होगा, विवेक भी प्रकट होगा।

एक बार मंदी की लहर चली और एक बड़ा

स्कूल बंद हो गया। मास्टर बेरोजगार हो गये और बेचारे रोजी-रोटी के लिए इधर-उधर भटकने लगे। कोई सर्कस में गया। सर्कसवाला उससे बोला : ''मास्टर साहब ! तुमको नौकरी तो मिलेगी पर तुमको शेर बनना पड़ेगा।''

''मैं शेर कैसे बनूँगा ?''

''अरे, डरो मत ! थोड़ा पैरों से और हाथों से चलने का प्रशिक्षण ले लो और शेर का मुँह और शेर की खाल पहना देंगे, फिर ऊपर तार पर चलना।''

''शेर की खाल ही पहननी है ?''

''हाँ।''

''बढ़िया नौकरी मिली। चलो, वहाँ गयी तो यहाँ रोजी चालू हो गयी।''

मास्टर ने प्रशिक्षण ले लिया। सर्कस में नाम हुआ। 'एक नया शेर आया है, शेर-ए-बबर। शेर-ए-बबर तार पर चलेगा और नीचे रहेंगे गुर्राते हुए शेर... सर्कस देखकर आप ताज्जुब करोगे। हैरानी हो जाय हैरानी !' लोगों ने टिकटें खरीदीं। सर्कस हाउसफुल ! मास्टर साहब शेर की खाल पहनकर चले और म्यूजिक से गुर्राता शेर... वह तो सर्कसवाले कर लेते हैं परंतु मास्टर ने देखा कि नीचे चार शेर गुर्रा रहे हैं। मास्टरजी घबराये, बैलेंस छूटा, धड़ाक-धूम ! वे जाली पर गिरे। अब देखा कि कहीं ये शेर खा न जायें ! तब वे जो चार शेर खड़े थे, बोले : ''पागल ! हम भी उसी स्कूल के बेरोजगार लोग हैं, तू डरता काहे को है ? हमारा भी तेरे जैसा ही मेकअप है।''

ऐसे ही संसार में कोई किसी धन से, कोई किसी सत्ता से, कोई और किसीसे बड़ा तो दिखता है पर अंदर से बेचारे सब वही-के-वही हैं, बिना रस के बेचारे ! जैसे बेरोजगार मास्टर, ऐसे ही भगवान से विमुख संसारी बेचारे किसी-न-किसी पीड़ा में मेकअप करके शेर बन के दिखते हैं लेकिन हैं वही-के-वही। कोई किसी दुःख में, कोई किसी चिंता में, कोई किसी तनाव में, कोई किसी समस्या में उलझा हुआ है।

कुल मिलाकर आपका आत्मा शाश्वत है, नित्य है।

ईस्वर अंस जीव अबिनासी
चेतन अमल सहज सुख रासी ॥

(श्री रामचरित. उ.कां. : ११६.१)

आप सहज में सुखराशि हो लेकिन ये आगंतुक चिंता, विकार, मान्यताएँ आपको दुःखी कर देती हैं। आप दुःख चाहते नहीं, ईश्वर ने दुःख बनाया नहीं, माया ने, प्रकृति ने दुःख बनाया नहीं, दुःख अज्ञानता के कारण है। अपने को दुःखी और पीड़ित मानकर दुःख, पीड़ा को गहरा न उतरने दो। 'दुःख मन में आता है, पीड़ा शरीर में आती है। मैं उन सबको जाननेवाला भगवान का अमृतपुत्र हूँ।'- ऐसा आत्मविचाररूपी उपाय करके दुःख को, पीड़ा को भगा सकते हो। □

संस्मरणीय उद्‌गार

आपके दर्शनमात्र से मुझे अद्‌भुत शक्ति मिलती है...

''पूज्य बापूजी के लिए मेरे दिल में जो श्रद्धा है, उसको बयान करने के लिए मेरे पास कोई शब्द नहीं है। आज के भटके समाज में भी यदि कुछ लोग सन्मार्ग पर चल रहे हैं तो यह इन महापुरुषों के अमृतवचनों का ही प्रभाव है। बापूजी की अमृतवाणी का विशेषकर मुझ पर तो बहुत प्रभाव पड़ता है। मेरा तो मन करता है कि बापूजी जहाँ कहीं भी हों, वहीं पर उड़कर उनके दर्शन के लिए पहुँच जाऊँ व कुछ पल ही सही, उनके सान्निध्य का लाभ लूँ। आपके दर्शनमात्र से ही मुझे एक अद्‌भुत शक्ति मिलती है।''

– श्री प्रकाश सिंह बादल, मुख्यमंत्री, पंजाब।

श्रद्धा संजीवनी

पपीहे जैसा नियम हो तो प्रभुप्राप्ति इसी जन्म में हो जाय

– जयदयालजी गोयन्दका

कोई भी मनुष्य यदि दृढ़ निश्चय कर ले कि आज भगवान अवश्य मिलेंगे तो इसमें कोई संदेह नहीं कि उसे भगवान आज मिलेंगे। ऐसा निश्चय करना तो अपना काम है। इसमें भगवान की दया को भी निमित्त बना लें। जैसे कोई परम मित्र के पहुँचने का तार आ जाय तो हम उसके स्वागत के लिए कितनी व्यवस्था करते हैं और प्रतीक्षा करते हैं, ऐसे ही प्रभुप्राप्ति की प्रतीक्षा करनी चाहिए। प्रभु इस बात को जानते हैं कि कौन उनकी प्रतीक्षा कर रहा है। आज उन्हें सच्चे मन से पुकारेंगे तो आज ही आपसे मिलने की उन्हें फुर्सत मिल जायेगी।

उसमें दो प्रकार की दशाएँ होती हैं - एक तो आर्तभाव, परम व्याकुलता जैसे मछली को जल से अलग होने पर होती है। जड़ तो जड़ है, प्रभु चैतन्य हैं, वे बड़े दयालु हैं। दूसरा भाव प्रेम का है। जैसे मित्र के आने का दृढ़ निश्चय होता है, उसमें प्रसन्नता एवं प्रतीक्षा होती है इसी प्रकार प्रभु में प्रेम होने पर वे अवश्य पहुँच जाते हैं। नियम और प्रेम दोनों रखें। नियम पपीहे का होता है, वह स्वाति की बूँद से ही अपनी प्यास बुझाना चाहता है। बादल बरसें तब भी उसका नियम नहीं टूटता, प्रेम में कमी नहीं आती। यहाँ तक कि उसके प्राण भी चले जायें, तब भी वह नियम नहीं तोड़ता। इसमें बादल तो जड़ हैं, वैसे ही बरस जाते हैं। प्रभु तो चैतन्य हैं और बड़े दयालु हैं, वे अपने प्रेमी को मरने नहीं देते।

इसी प्रकार हम भी नियम ले लें कि सिवाय प्रभु के और कुछ भी नहीं चाहिए। किसीका चिंतन न करें तो हमें प्रभु अवश्य ही मिलेंगे। 'हमें कैसे मिलेंगे ?' पहले से ही ऐसा विपरीत निश्चय नहीं करना चाहिए। दृढ़ विश्वास होना चाहिए।

कई लोग सोचते हैं कि अमुक महाराज दया कर दें, कह दें तो हमको ईश्वरप्राप्ति हो जायेगी, भगवान मिल जायेंगे। ऐसी अवस्था में भगवान से मिलने की आवश्यकता ही क्या है, जब किसीके कहने से मिलें।

करोड़ों में कोई एक भगवत्प्राप्त मनुष्य होता है और उनमें भी कोई विरला ही होता है जो भगवान को मिला सके। कोई कहे कि भगवत्प्राप्त पुरुष मार्ग तो बतला सकते हैं। यह ठीक है तो फिर लोग इतने अच्छे मार्ग पर क्यों नहीं चलते ? इसका उत्तर यही है कि इस विषय में उन्हें विश्वास नहीं है। इसी कारण समस्त संसार की यह दशा हो रही है।

बात रही महापुरुष की दया की, भगवान की दया की वह तो सतत रहती ही है। फिर भी काम नहीं होता तो यह मानना पड़ेगा कि हमें उनकी दया में विश्वास नहीं है। हमने उनकी दया को माना नहीं है, बात वास्तव में यही है।

गजेन्द्र, द्रौपदी आदि ने विश्वास से भगवान को बुलाया तो भगवान इनके पास अतिशीघ्र पहुँच गये। यद्यपि इनको दुःख-निवारण की ही आवश्यकता थी।

केवल भगवान से मिलने के लिए भगवान को चाहे तो वह तो बात ही कुछ और होती है। ऐसे भक्त से शीघ्र मिलने की (शेष पृष्ठ १९ पर)

परिवर्तन नहीं परिमार्जन

(पूज्य बापूजी का सत्संग-वचनामृत)

अर्जुन के सामने भगवान श्रीकृष्ण खड़े हैं, फिर भी उसका भय नहीं गया, शोक नहीं गया। जब उसने श्रीकृष्ण का सत्संग सुना और उस अनुसार अपने आत्मा का ज्ञान जगाया तो अर्जुन का भय भी नहीं रहा, शोक भी नहीं रहा, दुःख भी नहीं रहा और युद्ध जैसा घोर कर्म किया किंतु उसके ऊपर बंधन नहीं रहा, मुक्तात्मा हो गया।

तो गीता का ज्ञान तुम्हें ऐरी-गैरी चीजों में आसक्ति करके भोगी नहीं बनाना चाहता, ऐरी-गैरी परिस्थितियों का गुलाम बनाकर तुम्हें जगत का पिट्ठू नहीं देखना चाहता। लोग क्या करते हैं कि परिवर्तन चाहते हैं। दुःख आया है... अब दुःख मिटे, सुख आये। रोग आया है... रोग मिटे, तंदुरुस्ती आये। निंदा आयी है, अभी सराहना आ जाय, परिवर्तन... **परिवर्तन करते-करते खुद परिवर्तित होकर मौत के मुँह में चले जाते हैं लेकिन 'गीता' कहती है कि परिवर्तन के चक्कर में मत आओ। दुःख को सुख से दबाओ मत। दुःख की जड़ उखाड़ के फेंक दो। निंदा को प्रशंसा से दबाओ मत, निंदा और प्रशंसा की गहराई में तुम एकरूप हो – ऐसी ज्ञान की समझ जगाओ। बीमारी में और तंदुरुस्ती में तुम एकरस हो। बचपन, जवानी, बुढ़ापा – यह सब बदलता है, फिर भी जो नहीं बदलता वह है तुम्हारा अपना आप, हर परिस्थिति का बाप !** गुरु की कृपा से ऐसे अनुभव की कुंजी पा लो। शब्दों की डींग मत हाँकना। वास्तविक अनुभव में सद्गुरु का प्यारा सत्शिष्य ही पहुँच सकता है।

अपने जीवन में परिवर्तन की इच्छा मत करो। जैसे यूरोप, अमेरिका, और देश परिवर्तन, परिवर्तन में लगे हैं। नया पैक, नया फैशन, गाड़ी नयी, मॉडल नया, कार्पेट नया, रंग-रोगन नया... नया, नया, नया... परिवर्तन, परिवर्तन... यहाँ तक कि पत्नी बदलो, पति बदलो, मकान बदलो... फिर भी अभागे लोग दुःखी हैं। **'गीता' कहती है प्रकृति के परिवर्तन में मत पड़ो। तुम तो अपनी बुद्धि का परिमार्जन करो। सारे परिवर्तन तुम्हें उलझा रहे हैं। तुम परिवर्तन के आधारस्वरूप परमात्मा में सुलझकर अभी सुखी हो जाओ, अभी निश्चिंत हो जाओ, अभी निर्भय हो जाओ।**

मर जायेंगे फिर हमें श्मशान में, कब्र में डालकर आयेंगे। कोई पैगम्बर आकर हमारे लिए सिफारिश करेगा, फिर हमें बिहिश्त मिलेगा, अप्सराएँ मिलेंगी, शराब के चश्मे मिलेंगे। यहाँ शराब की बोतल तबाही कर देती है, अपनी पत्नी के सिवाय रावण जैसा भी यदि दूसरे की पत्नी के प्रति बुरी नजर करता है तो उसकी दुर्दशा होती है तो वे अप्सराएँ क्या दे देंगी ! सोचते हैं, 'यहाँ बुढ़िया है, मर जायेंगे तो अप्सराएँ मिलेंगी।' शराब के चश्मे, हूरें और हूरों का विलास तुम्हें नोच लेगा बेटे ! सावधान हो जाओ, ऐसी ख्वाहिश मत करो। इश्क मिजाजी, इश्क इलाही, इश्क नूरानी में अभी लग जाओ। जिसे प्रेमाभक्ति, अनुरागा भक्ति, पराभक्ति भी कहते हैं।

मद्भक्तिं लभते पराम्।

श्रीकृष्ण के वचनों को रहीम खानखाना ने और अकबर की बेगम ताज ने अनुभव किया, मौलाना जलालुद्दीन रूमी ने, कबीरजी ने और लीलाशाह प्रभुजी ने, राजा जनक ने जो प्रेमाभक्ति का परम

स्वाद पाया और बाँटा उसीमें तुम आ जाओ।

सब दुःखों की एक दवाई,

पराभक्ति पा लो भाई।

वह प्रभु तुमसे दूर नहीं, तुम उससे दूर नहीं।

आदि सचु जुगादि सचु।

है भी सचु नानक होसी भी सचु॥

तो 'गीता' परिवर्तन नहीं परिमार्जन करती है, समझ बदल देती है। परिवर्तन प्रकृति में होगा।

यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ।

समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते॥

'हे पुरुषश्रेष्ठ ! दुःख-सुख को समान समझनेवाले जिस धीर पुरुष को ये इन्द्रिय और विषयों के संयोग व्याकुल नहीं करते, वह मोक्ष के योग्य होता है।' **(गीता : २.१५)**

परमात्मा तो नित्य और एकरस है। जो भी होगा हमारे विकास के लिए होगा। सिनेमा में सुंदर मकान, बगीचे दिखते हैं। हो-हो के चले जाते हैं। जो मूर्ख है, उन्हें रोके रखना चाहता है वह दुःखी होगा। जो अपने ढंग का देखना चाहता है वह भी दुःखी होगा। जो दिख रहा है, दिख रहा है... बदल रहा है, बदल रहा है। जो आता है आने दो, जाता है जाने दो। बनता है बनने दो, बिगड़ता है तो बिगड़ने दो। जो धन मिल गया, मिल गया। जो चला गया, उसके लिए रोते क्यों हो ! जो मान मिल गया मिल गया, चला गया तो चला गया। इसीका नाम तो दुनिया है।

खून पसीना बहाता जा, तान के चादर सोता जा।

यह नाव तो हिलती जायेगी, तू हँसता जा या रोता जा॥

तो काहे को रोयें ! वाह-वाह ! क्यों न करें ! अपनी बुद्धि में भगवान के ज्ञान का प्रकाश ले आओ। जो बीत गया उसको याद करके शोक मत करो। मैं पहले ऐसा सुखी था, यह दुःख मिला, अभी ऐसा है। नहीं-नहीं, जो बीत गया, अभी हमारे पास नहीं है उसके पीछे क्यों मरें !

भविष्य हमारे सामने नहीं है, वर्तमान में आनंदित करो, परिमार्जित करो अपने मन को। रसमय जीवन... जिह्वा में भगवद्रस, मन में भगवद्रस भरो। मधुर बोलेंगे, सारगर्भित बोलेंगे, स्नेहयुक्त बोलेंगे, गीता के ज्ञान से भरकर वाणी बोलेंगे। **हो गया परिमार्जन !** मन में किसीका बुरा नहीं सोचेंगे, किसीका बुरा नहीं चाहेंगे और कोई भी हमारा बुरा करे तो वह व्यक्ति सदा के लिए ऐसा नहीं है, ऐसी समझ जाग्रत रखेंगे। कोई किसीको दुःख देता है तो दुःख सामनेवाले को मिले-न मिले, दुःख देनेवाले का दिल तो दुःख देने के विचार से गंदा होता है और कोई किसीको सुख देता है या भला करता है तो सामनेवाले का कब-कितना भला हो भगवान जानें लेकिन भलाई के विचार से उसका खुद का दिल तो भला होता है न !

जो हुआ अच्छा हुआ, जो हो रहा है अच्छा है, जो होगा वह भी अच्छा होगा यह नियम प्रभु का है। हम मन के चाहे पर अड़ जाते हैं इसीलिए दुःख होता है, तनाव होता है। बच्चा मनचाही चाहता है इसीलिए दुःखी होता है। माँ बच्चे को रगड़-रगड़ के शुद्ध करना चाहती है लेकिन बच्चे को अच्छा नहीं लगता, स्कूल भेजना चाहती है लेकिन अच्छा नहीं लगता फिर भी रोते-रोते भी स्नान तो करना पड़ता है, रोते-रोते भी स्कूल जाना तो पड़ता है। तो आप अपना मनचाहा परिवर्तन मत करो, परिमार्जन होने दो।□

(पृष्ठ १० से 'पपीहे जैसा नियम हो तो प्रभुप्राप्ति इसी जन्म में हो जाय' का शेष) भगवान की भी इच्छा हो जाती है, इसलिए ऐसा समझना चाहिए कि प्रभु की इच्छा तो पूरी होगी ही। हमारी इच्छा पूरी हो इसमें हम लाचार हैं, पर प्रभु की इच्छा पूरी न हो ऐसा नहीं हो सकता।

जब हमारी इच्छा केवल और केवल उनसे मिलने की हो जायेगी तो सारा भार भगवान पर आ जायेगा और ऐसे प्रेमी भक्त के वश होकर भगवान उससे मिल जाते हैं।□

वीर्यरक्षण ही जीवन है

वीर्य इस शरीररूपी नगर का एक तरह से राजा ही है। यह राजा यदि पुष्ट है, बलवान है तो रोगरूपी शत्रु कभी शरीररूपी नगर पर आक्रमण नहीं करते। जिसका वीर्यरूपी राजा निर्बल है, उस शरीररूपी नगर को कई रोगरूपी शत्रु आकर घेर लेते हैं। इसीलिए कहा गया है : **मरणं बिन्दुपातेन जीवनं बिन्दुधारणात्।** 'बिन्दुनाश (वीर्यनाश) ही मृत्यु है और बिन्दुरक्षण ही जीवन है।' जैन ग्रंथों में अब्रह्मचर्य को पाप बताया गया है : **अबंभचरियं घोरं पमायं दुरहिट्ठियम्।** 'अब्रह्मचर्य घोर प्रमादरूप पाप है।' **(दश वैकालिक सूत्र : ६.१७)**

'अथर्ववेद' में ब्रह्मचर्य को उत्कृष्ट व्रत की संज्ञा दी गयी है : **व्रतेषु वै वै ब्रह्मचर्यम्।**

ब्रह्मचर्यं परं बलम्। 'ब्रह्मचर्य परम बल है।'– ऐसा वैद्यकशास्त्र में कहा गया है।

वीर्यरक्षण की महिमा सभी सत्पुरुषों ने गायी है। योगिराज गोरखनाथ ने कहा है :

कंत गया कूँ कामिनी झूरै।
बिन्दु गया कूँ जोगी॥

'पति के वियोग में कामिनी तड़पती है और वीर्यपतन होने पर योगी पश्चात्ताप करता है।'

भगवान शंकर ने तो यहाँ तक कह दिया है :

यस्य प्रसादान्महिमा ममाप्येतादृशो भवेत्।

'इस ब्रह्मचर्य के प्रताप से ही मेरी ऐसी महान महिमा हुई है।'

आधुनिक चिकित्सकों का मत

यूरोप के प्रतिष्ठित चिकित्सक भी भारतीय योगियों के कथन का समर्थन करते हैं। डॉ. निकोल कहते हैं : ''यह एक भैषजिक व दैहिक तथ्य है कि शरीर के सर्वोत्तम रक्त से स्त्री तथा पुरुष दोनों ही जातियों में प्रजनन-तत्त्व बनते हैं। शुद्ध व व्यवस्थित जीवन में यह तत्त्व पुनः अवशोषित हो जाता है। यह सूक्ष्मतम मस्तिष्क, स्नायु तथा मांसपेशीय ऊतकों (tissues) का निर्माण करने के लिए तैयार होकर पुनः परिसंचरण में जाता है। मनुष्य का यह वीर्य ऊर्ध्वगामी होकर शरीर में फैलने पर उसे निर्भीक, बलवान, साहसी तथा वीर बनाता है। यदि इसका अपव्यय किया गया तो यह उसको स्त्रैण, दुर्बल, कृशकलेवर एवं कामोत्तेजनशील बनाता है तथा उसके शरीर के अंगों के कार्यव्यापार को विकृत एवं स्नायुतंत्र को शिथिल (दुर्बल) करता है और उसे मिर्गी एवं अन्य अनेक रोगों तथा मृत्यु का शिकार बना देता है। जननेन्द्रिय के व्यवहार की निवृत्ति से शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक बल में असाधारण वृद्धि होती है।''

परम धीर एवं अध्यवसायी वैज्ञानिकों के अनुसंधानों से पता चला है कि जब कभी भी वीर्य को सुरक्षित रखा जाता है तथा इस प्रकार शरीर में उसका पुनः अवशोषण किया जाता है तो वह रक्त को समृद्ध व मस्तिष्क को बलवान बनाता है।

डॉ. डिओ लुई कहते हैं : ''शारीरिक बल, मानसिक ओज तथा बौद्धिक कुशाग्रता के लिए इस तत्त्व (वीर्य) का संरक्षण परम आवश्यक है।''

डॉ. ई. पी. मिलर लिखते हैं : ''शुक्रस्राव का स्वैच्छिक या अनैच्छिक अपव्यय जीवनशक्ति का प्रत्यक्ष अपव्यय है। यह प्रायः सभी स्वीकार करते हैं कि रक्त के सर्वोत्तम तत्त्व शुक्रस्राव की

संरचना में प्रवेश कर जाते हैं। यदि यह निष्कर्ष ठीक है तो इसका अर्थ यह हुआ कि व्यक्ति के कल्याण के लिए जीवन में ब्रह्मचर्य परम आवश्यक है।''

पश्चिम के प्रख्यात चिकित्सक कहते हैं कि वीर्यक्षय से विशेषकर तरुणावस्था में अनेक रोग उत्पन्न होते हैं। वे हैं : शरीर में व्रण, चेहरे पर मुँहासे या विस्फोट, नेत्रों के चतुर्दिक नीली रेखाएँ, दाढ़ी का अभाव, धँसे हुए नेत्र, रक्तक्षीणता से पीला चेहरा, स्मृतिनाश, दृष्टि की क्षीणता, मूत्र के साथ वीर्यस्खलन, अण्डकोश की वृद्धि, अण्डकोशों में पीड़ा, दुर्बलता, निद्रालुता, आलस्य, उदासी, हृदय-कम्प, श्वासावरोध या कष्टश्वास, यक्ष्मा, पृष्ठशूल, कटिवात, शिरोवेदना, संधि-पीड़ा, दुर्बल वृक्क, निद्रा में मूत्र निकल जाना, मानसिक अस्थिरता, विचारशक्ति का अभाव, दुःस्वप्न, स्वप्नदोष व मानसिक अशांति।

उपरोक्त रोगों को मिटाने का एकमात्र इलाज ब्रह्मचर्य है। ब्रह्मचर्य-पालन में निम्न प्रयोग मदद करेंगे : ८० ग्राम आँवला चूर्ण और २० ग्राम हल्दी चूर्ण का मिश्रण बना लो। सुबह-शाम ३-३ ग्राम यह मिश्रण फाँकने से ८-१० दिन में ही उपरोक्त सभी रोगों में चमत्कारिक लाभ होगा। वीर्यरक्षा में इससे मदद मिलेगी और **'ॐ अर्यमायै नमः'** मंत्र बड़ा महत्त्वपूर्ण है। 'गीता' में भी इसके देवता अर्यमा की महिमा है। स्थल-बस्ति भी वीर्यरक्षा में अमोघ उपाय है। लेटकर श्वास बाहर निकालें और अश्विनी मुद्रा अर्थात् ३०-३५ बार गुदाद्वार का आकुंचन-प्रसरण श्वास रोककर करें। ऐसे एक बार में ३०-३५ संकोचन-विस्तरण करें। तीन-चार बार श्वास रोकने में १०० से १२० बार हो जायेगा। यह ब्रह्मचर्य की रक्षा में खूब मदद करेगी। इससे व्यक्तित्व का विकास होगा ही, वात-पित्त-कफजन्य रोग भी दूर होंगे। □

भगवान से अपनत्व

– स्वामी रामसुखदासजी महाराज

हमने संतों से यह बात सुनी है कि जो भगवान को मान लेता है, उसको अपना स्वरूप जना देने की जिम्मेदारी भगवान पर आ जाती है। कितनी विलक्षण बात है! 'भगवान कैसे हैं, कैसे नहीं' – इसका ज्ञान उसको खुद को नहीं करना पड़ता। वह तो केवल मान लेता है कि 'भगवान हैं।' 'वे कैसे हैं, कैसे नहीं' – यह संदेह उसको होता ही नहीं।

पहले केवल भगवान की सत्ता स्वीकार हो जाय कि 'भगवान हैं', फिर भगवान में विश्वास हो जाता है। संसार का विश्वास टिकता नहीं क्योंकि हमें इस बात का ज्ञान है कि वस्तु, व्यक्ति आदि पहले नहीं थे, पीछे नहीं रहेंगे और अब भी निरंतर नाश की तरफ जा रहे हैं। परंतु भगवान के विषय में ऐसा नहीं होता क्योंकि भगवान पहले भी थे, पीछे भी रहेंगे और अब भी हैं। भगवान पर विश्वास हो जाने पर फिर उनमें अपनत्व हो जाता है कि 'भगवान हमारे हैं'। जीवात्मा भगवान का अंश है – **ममैवांशो जीवलोके...** अतः भगवान हमारे हुए। इसलिए आस्तिक भाववालों को यह दृढ़ता से मान लेना चाहिए कि भगवान हैं और हमारे हैं। ऐसी दृढ़ मान्यता होने पर फिर भगवान से मिले बिना रहा नहीं जा सकता। जैसे बालक दुःख पाता है तो उसके मन में माँ से मिलने के विचार आते हैं। उसके मन में यह बात पैदा ही नहीं होती कि 'मैं योग्य हूँ कि अयोग्य हूँ, पात्र हूँ कि अपात्र हूँ।'

जैसे भगवान पर विश्वास होता है, ऐसे ही भगवान के संबंध पर भी विश्वास होता है कि भगवान हमारे हैं। 'भगवान कैसे हैं ? मैं कैसा हूँ ?' – यह बात वहाँ नहीं होती। 'भगवान मेरे

हैं, अतः मेरे को अवश्य मिलेंगे' - ऐसा दृढ़ विश्वास कर ले। यह 'मेरा'पन बड़े-बड़े साधनों से ऊँचा है । त्याग, तपस्या, व्रत, उपवास, तितिक्षा आदि जितने भी साधन हैं, उन सबसे ऊँचा साधन है 'भगवान में अपनापन'। अपनेपन में कोई विकल्प नहीं होता। करनेवाले तो करने के अनुसार फल को प्राप्त करेंगे पर भगवान को अपना माननेवाले मुफ्त में पूर्ण भगवान को प्राप्त करेंगे ।

करनेवाले जितना-जितना करेंगे, उनको उतना-उतना ही फल मिलेगा परंतु भगवान में अपनापन होने से भगवान पर पूर्ण अधिकार मिलेगा । जैसे बालक माँ पर अपना पूरा अधिकार मानता है कि 'माँ मेरी है, मैं माँ से चाहे जो काम करा लूँगा, उससे चाहे जो चीज ले लूँगा।' बालक के पास बल क्या है ? रो देना - यही बल है। निर्बल-से-निर्बल आदमी के पास रोना ही बल है। रोने में क्या जोर लगाना पड़े ! बच्चा रोने लग जाय तो माँ को उसका कहना मानना पड़ता है। इसी तरह रोने लग जाय कि 'भगवान मेरे हैं तो फिर दर्शन क्यों नहीं देते ? मेरे से मिलते क्यों नहीं ?' भीतर में ऐसी जलन पैदा हो जाय, ऐसी उत्कण्ठा हो जाय कि 'भगवान मिलते क्यों नहीं ?' इस जलन में, उत्कण्ठा में इतनी शक्ति है कि अनंत जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं, कोई भी दोष नहीं रहता, निर्दोषता हो जाती है। जो भगवान के लिए व्याकुल हो जाता है, उसकी निर्दोषता स्वतः हो जाती है। व्याकुलता की अग्नि में पाप-ताप जितनी जल्दी नष्ट होते हैं उतनी जल्दी जिज्ञासा में नहीं होते। जिज्ञासा बढ़ते-बढ़ते जब जिज्ञासुरूप हो जाती है अर्थात् जिज्ञासु नहीं रहता केवल जिज्ञासा रह जाती है, तब उसकी सर्वथा निर्दोषता हो जाती है और वह तत्त्व को प्राप्त हो जाता है।

जब तक 'मैं जिज्ञासु हूँ' - यह 'मैं'पन रहता है, तब तक जिज्ञास्य तत्त्व प्रकट नहीं होता । जब यह 'मैं'पन नहीं रहता, तब जिज्ञास्य तत्त्व प्रकट हो जाता है। चाहे जिज्ञासा हो, चाहे विश्वास हो, दोनों में से कोई एक भी दृढ़ हो जायेगा तो तत्त्व प्रकट हो जायेगा । कर्तव्य का पालन स्वतः हो जायेगा । जिज्ञासु से भी कर्तव्य का पालन होगा और विश्वासी से भी कर्तव्य का पालन होगा। दोनों ही अपने कर्तव्य-कर्म का तत्परता से पालन करेंगे।

विश्वासी मनुष्य कर्तव्य की दृष्टि से कर्तव्य का पालन नहीं करता परंतु भगवान के वियोग में रोता है। रोने में ही उसका कर्तव्य पूरा हो जाता है। उसमें केवल भगवत्प्राप्ति की उत्कण्ठा रहती है। केवल भगवान-ही-भगवान याद रहते हैं। भगवान के सिवाय और कोई चीज सुहाती नहीं।

अब कुछ भी नहीं सुहावे, एक तू ही मन भावे।

दिन में भूख नहीं लगती, रात में नींद नहीं आती, बार-बार की व्याकुलता में बहुत विलक्षण शक्ति है। यह जो भजन-स्मरण करना है, त्याग-तपस्या करना है, तीर्थ-उपवास आदि करना है, ये सभी अच्छे हैं परंतु ये धीरे-धीरे पापों का नाश करते हैं और व्याकुलता होने पर आग लग जाती है, जिसमें सब पाप भस्म हो जाते हैं, सारी साधनाएँ एक साथ पूरी हो जाती हैं और साधक साध्य को पाकर जीवन्मुक्त हो जाता है।

साधक को याद रखना चाहिए :

चातक मीन पतंग जब पिया बिन नहीं रह पाये।
साध्य को पाये बिना साधक क्यों रह जाये ?

विरह की आग लगाओ, जिसमें पाप-ताप, अहंता-ममता, तू-तेरा, मैं-मेरा सब स्वाहा हो जायें । सबका अधिष्ठान आत्मा-ब्रह्म प्रकाशित हो जाय, ऐसी विरह की आग लगाओ ।

हे प्रभु ! ऐसी वेला कब आयेगी... हे प्रभु !... हे हरि !... □

गुरुभक्ति-योग

- ब्रह्मलीन स्वामी श्री शिवानंदजी

गुरुभक्तियोग के मूल सिद्धांत

* गुरुभक्तियोग का अभ्यास माने गुरु के प्रति शुद्ध उत्कट प्रेम।

* ईमानदारी के सिवाय गुरुभक्तियोग में बिल्कुल प्रगति नहीं हो सकती।

* महान योगी गुरु के आश्रय में उच्च आध्यात्मिक स्पंदनोंवाले शांत स्थान में रहो। फिर उनकी निगरानी में गुरुभक्तियोग का अभ्यास करो। तभी आपको गुरुभक्तियोग में सफलता मिलेगी।

* ब्रह्मनिष्ठ गुरु के चरणकमलों में बिनशर्ती आत्मसमर्पण करना ही गुरुभक्तियोग का मुख्य सिद्धांत है।

* गुरुभक्तियोग की फिलॉसफी के मुताबिक गुरु और ब्रह्म एकरूप हैं। अतः गुरु के प्रति सम्पूर्ण आत्मसमर्पण करना अत्यंत आवश्यक है।

* गुरु के प्रति सम्पूर्ण आत्मसमर्पण करना, यह गुरुभक्तियोग का सर्वोच्च सोपान है।

* गुरुभक्तियोग के अभ्यास में गुरुसेवा सर्वस्व है।

* गुरुकृपा गुरुभक्तियोग का आखिरी ध्येय है।

* मोटी बुद्धि का शिष्य गुरुभक्तियोग के अभ्यास में कोई निश्चित प्रगति नहीं कर सकता।

* जो शिष्य गुरुभक्तियोग का अभ्यास करना चाहता है, उसके लिए कुसंग शत्रु के समान है।

* अगर आपको गुरुभक्तियोग का अभ्यास करना हो तो विषयी जीवन का त्याग करो।

शाश्वत सुख का मार्ग

* जो व्यक्ति दुःख को पार करके जीवन में सुख एवं आनंद प्राप्त करना चाहता है, उसे अंतःकरणपूर्वक गुरुभक्तियोग का अभ्यास करना जरूरी है।

* सच्चा एवं शाश्वत सुख तो गुरुसेवायोग का आश्रय लेने से ही मिल सकता है, नाशवान बाह्य पदार्थों से नहीं।

* जन्म-मृत्यु के लगातार चलनेवाले चक्कर से छूटने का कोई उपाय नहीं है क्या ? सुख-दुःख, हर्ष-शोक के द्वन्द्वों से मुक्ति नहीं मिल सकती क्या ? हे शिष्य ! सुन, इसका एक निश्चित उपाय है। नाशवान विषयी पदार्थों में से अपना मन वापस खींच ले और गुरुसेवायोग का आश्रय ले। इससे तू सुख-दुःख, हर्ष-शोक, जन्म-मृत्यु के द्वन्द्वों से पार हो जायेगा।

* मनुष्य जब गुरुभक्तियोग का आश्रय लेता है तभी उसका सच्चा जीवन शुरू होता है। जो व्यक्ति गुरुभक्तियोग का अभ्यास करता है, उसे इस लोक में एवं परलोक में चिरंतन सुख प्राप्त होता है।

* गुरुभक्तियोग उसके अभ्यासु को चिरायु एवं शाश्वत सुख प्रदान करता है।

* मन ही इस संसार एवं उसकी प्रक्रिया का मूल है। मन ही बंधन और मोक्ष, सुख और दुःख का मूल है। इस मन को केवल गुरुभक्तियोग के द्वारा ही संयम में रखा जा सकता है।

* गुरुभक्तियोग अमरत्व, शाश्वत सुख, मुक्ति, पूर्णता, अखूट आनंद और चिरंतन शांति देनेवाला है।

गुरुभक्तियोग की महत्ता

* परम शांति का राजमार्ग गुरुभक्तियोग के अभ्यास से शुरू होता है।

* जो-जो सिद्धियाँ संन्यास, त्याग, अन्य योग, दान एवं शुभ कार्य आदि से प्राप्त की जा सकती हैं, वे सब सिद्धियाँ गुरुभक्तियोग के अभ्यास से शीघ्र प्राप्त हो सकती हैं। □

सर्वश्रेष्ठ दान

धर्म के चार चरण होते हैं : सत्य, तप, यज्ञ और दान। सत्ययुग गया तो सत्य गया, त्रेता गया तो तप गया, द्वापर गया तो यज्ञ गया, **दानं केवलं कलियुगे।** कलियुग में धर्म का दानरूपी एक ही चरण रह गया।

'भविष्य पुराण' (१५१.१८) में लिखा है कि दानों में तीन दान अत्यंत श्रेष्ठ हैं - गोदान, भूमिदान और विद्यादान। ये दुहने, जोतने और जानने से सात कुल तक पवित्र कर देते हैं।

नौ प्रकार के व्यक्तियों को दिया हुआ दान दाता का कल्याण करता है। उसको यश का भागी बनाता है। दूसरे जन्म में अकारण ही धन-धान्य, सुख-सम्पत्ति उसको ढूँढ़ती हुई आती है। अगर वह ईश्वर की प्रीति के लिए दान करता है तो ईश्वर भी प्रसन्न होते हैं। इन नौ व्यक्तियों के लिए लगाया हुआ धन दाता को भोग और मोक्ष से सम्पन्न कर देता है, अक्षय फल की प्राप्ति कराता है।

(१) जो सदाचारी हैं, संयमी हैं ऐसे पुरुषों की सेवा में या ऐसे पुरुषों के दैवी कार्य में दान करने से दान सफल होता है।

(२) जो विनीत हैं। (३) जो वास्तव में ईमानदार हैं और दीन अवस्था में आ गये हैं।

(४) जो परोपकार के काम करते हैं।

(५) जो अनाथ हैं, उनकी सेवा में एवं उनकी उन्नति में धन लगाना दाता का कल्याण करने में सहायक है।

(६) माता (७) पिता (८) गुरु की सेवा में लगाया गया धन सार्थक होता है।

(९) जो सच्चे मित्र हों तथा उनकी अवस्था गिर गयी हो तो उनको मदद करना यह भी उचित दान कहा गया है।

दान देकर स्वयं उसका वर्णन करना, रोषपूर्वक देना, देकर पश्चात्ताप करना - दान को व्यर्थ बना देते हैं।

कोई लोभवश दान देता है, कोई कामनापूर्ति करनेवाले को दान देता है, कोई लज्जावश दान देता है, कोई किसी पर प्रसन्न होकर दान देता है, कोई भयवश दान देता है, कोई अपना धर्म समझकर दान देता है। सर्वश्रेष्ठ वही है जो परमात्म-प्रेम में तृप्त रहकर सर्वस्व का (अपने आत्मिक अनुभव का) दान देता है पर अपने को दानी नहीं मानता। विश्व में ऐसे सर्वश्रेष्ठ दाता तो ब्रह्मज्ञानी सद्गुरु ही होते हैं। 'ऋग्वेद' में भी आता है - संसार का सर्वश्रेष्ठ दान ज्ञानदान ही है क्योंकि चोर इसे चुरा नहीं सकते, न ही कोई इसे नष्ट कर सकता है। यह निरंतर बढ़ता रहता है और लोगों को स्थायी सुख देता है।

पूज्य बापूजी कहते हैं : ''कलियुग में दान की बड़ी भारी महिमा है। अन्नदान, कन्यादान, गोदान, गोरस-दान, सुवर्णदान, भूमिदान, विद्यादान और अभय दान - ये आठ प्रकार के दान हैं परंतु इनसे भी एक विलक्षण दान है जो सत्संग का दान है। कन्यादान लेने के बाद भी जमाई शराबी-जुआरी हो सकता है, चोर हो सकता है लेकिन सत्संग-दान मिलता है तो शराबी की शराब छूट जाती है, भँगेड़ी की भाँग छूट जाती है, अभिमानी का अभिमान कम हो जाता है, चिंतावालों की चिंता कम हो जाती है, पापी के पाप कम हो जाते हैं और किये हुए पाप का क्लेश भी सत्संग से दूर हो जाता है।

सत्संग के बिना मनुष्य सच्चा भक्त भी नहीं बन सकता और सच्ची भक्ति के बिना परमात्मा की कृपा का पता भी नहीं चल पाता। ⇨

प्रभु-पूजा के पुष्प

हर भक्त ईश्वर की; गुरु की पूजा करना चाहता है। इस उद्देश्य से वह धूप, दीप और बाह्य पुष्पों से पूजा की थाली को सजाता है। बाह्य पुष्पों एवं धूप-दीप से पूजा करना तो अच्छा है परंतु इतने से इष्ट या गुरु प्रसन्न नहीं होते। ईश्वर या गुरु की कृपा को शीघ्र पाना हो तो भक्त को अपनी दिलरूपी पूजा की थाली में भक्ति, श्रद्धा, प्रेम, समता, सत्य, संयम, सदाचार, क्षमा, सरलता आदि दैवी सद्गुणरूपी पुष्प भी सजाने चाहिए। पवित्र और स्वस्थ मन-मंदिर में मनमोहन की स्थापना करनी हो तो इन पुष्पों की ही आवश्यकता पड़ेगी।

इन फूलों का त्याग करके जो केवल बाह्य फूलों से ही परमात्मा को प्रसन्न करना चाहता है, उस भक्त के हृदय में सच्चिदानंद भगवान अपने आनंद, माधुर्य, ऐश्वर्य के साथ विराजमान नहीं होते और जहाँ सच्चिदानंदस्वरूप की प्रतिष्ठा ही न हो वहाँ उनकी पूजा का प्रश्न ही कहाँ पैदा होता है!

इस हकीकत को हृदय में दृढ़ कर लो कि जगत क्षणभंगुर है और हम सब मौत के मुख में बैठे हैं। काल-देवता कब, किस घड़ी किसका ग्रास कर लेंगे इसका पता तक न चलेगा। इसलिए प्रत्येक क्षण सावधान रहो। ईश्वर ने साधन-शक्ति दी है तो दूसरों के सुख का सेतु बनो, किसीके दुःख का कारण तो कभी न बनना। सबका भला चाहो और साथ-साथ सबका भला करो भी। ईश्वर से प्रेम करो और अपने विशुद्ध व्यवहार से आपके स्वामी भगवान, गुरुदेव के प्रति सबको प्रेमभाव जगे ऐसा आचरण करो।

कभी भी हृदय में निराशा को, हताशा को स्थान मत देना और इतना तो पक्का समझना कि दुनिया के सबसे बड़े महापुरुष को ईश्वर ने जितनी शक्ति दी है, उतनी शक्ति तुम्हें भी दी है, फर्क केवल इतना ही है कि उन्होंने जिस निश्चय, विश्वास और साधना से आत्मशक्ति का विकास किया है, वह तुमने नहीं किया है। नहीं तो यदि तुम्हारा दृढ़ निश्चय हो, अविचल विश्वास और नियमित साधना हो तो तुम भी इसी जन्म में ऊँचे-से-ऊँचे ध्येय को सिद्ध कर सकते हो।

अपनी इस अशक्ति को नजर के सामने रखकर तुम उत्साहहीन मत बनना। तुम शक्तिहीन हो या शक्तिमान किंतु सर्वशक्तिमान प्रभु तो सदा अपने बालकों की सहायता करने के लिए प्रतिक्षण मौजूद हैं। केवल उस शक्ति को पाने के लिए तुम्हारी अपनी तत्परतापूर्वक तैयारी होनी चाहिए।

अतः अपनी पूजा की थाली में कर्तव्य-परायणता, परहित की भावना, शील, संयम, निर्भयता आदि दिव्य सुख प्रदान करनेवाले सद्गुण अवश्य सजाना। इससे हे मानव! तेरा कल्याण अवश्य हो जायेगा। ❑

⇨ भक्ति शुरु करनी हो तो भी सत्संग चाहिए। नीतिमत्ता का स्तर ऊँचा लाना हो तो भी सत्संग चाहिए। तन का स्वास्थ्य सुधारना हो तो भी सत्संग चाहिए और मन का स्वास्थ्य सुधारना हो तो भी सत्संग चाहिए।

इसलिए जो लोग संत और समाज के बीच सत्संग-आयोजन के दैवी कार्य में साझेदार होते हैं, सत्संग पर आधारित शास्त्रों को लोगों तक पहुँचाने में तन-मन-धन से लगे रहते हैं, वे दिव्य दान के पुण्यभागी होते हैं।

एक घड़ी आधी घड़ी आधी में पुनि आध।
तुलसी संगत साध की हरे कोटि अपराध॥'' ❑

तुलसी व तुलसी-माला की महिमा

तुलसीदल एक उत्कृष्ट रसायन है । यह गर्म और त्रिदोषशामक है । रक्तविकार, ज्वर, वायु, खाँसी एवं कृमि-निवारक है तथा हृदय के लिए हितकारी है । सफेद तुलसी के सेवन से त्वचा, मांस और हड्डियों के रोग दूर होते हैं। काली तुलसी के सेवन से सफेद दाग दूर होते हैं। तुलसी की जड़ और पत्ते ज्वर में उपयोगी हैं। वीर्यदोष में इसके बीज उत्तम हैं । तुलसी की चाय पीने से ज्वर, आलस्य, सुस्ती तथा वात-पित्त विकार दूर होते हैं, भूख बढ़ती है ।

तुलसी की महिमा बताते हुए भगवान शिव नारदजी से कहते हैं :

पत्रं पुष्पं फलं मूलं शाखा त्वक् स्कन्धसंज्ञितम् ।
तुलसीसंभवं सर्वं पावनं मृत्तिकादिकम् ॥

'तुलसी का पत्ता, फूल, फल, मूल, शाखा, छाल, तना और मिट्टी आदि सभी पावन हैं।'

(पद्मपुराण, उत्तर खंड : २४.२)

जहाँ तुलसी का समुदाय हो, वहाँ किया हुआ पिण्डदान आदि पितरों के लिए अक्षय होता है।

तुलसी-सेवन से शरीर स्वस्थ और सुडौल बनता है। मंदाग्नि, कब्जियत, गैस, अम्लता आदि रोगों के लिए यह रामबाण औषधि सिद्ध हुई है।

गले में तुलसी की माला धारण करने से जीवनशक्ति बढ़ती है, बहुत-से रोगों से मुक्ति मिलती है । तुलसी की माला पर भगवन्नाम-जप करने से एवं गले में पहनने से आवश्यक एक्यूप्रेशर बिंदुओं पर दबाव पड़ता है, जिससे मानसिक तनाव में लाभ होता है, संक्रामक रोगों से रक्षा होती है तथा शरीर-स्वास्थ्य में सुधार होकर दीर्घायु की प्राप्ति होती है । तुलसी-माला धारण करने से शरीर निर्मल, रोगमुक्त व सात्त्विक बनता है । तुलसी शरीर की विद्युत-संरचना को सीधे प्रभावित करती है। इसको धारण करने से शरीर में विद्युतशक्ति का प्रवाह बढ़ता है तथा जीव-कोशों द्वारा उसको धारण करने के सामर्थ्य में वृद्धि होती है ।

गले में माला पहनने से बिजली की लहरें निकलकर रक्त-संचार में रुकावट नहीं आने देतीं । प्रबल विद्युतशक्ति के कारण धारक के चारों ओर चुम्बकीय मंडल विद्यमान रहता है ।

तुलसी की माला पहनने से आवाज सुरीली होती है, गले के रोग नहीं होते, मुखड़ा गोरा, गुलाबी रहता है। हृदय पर झूलनेवाली तुलसी-माला फेफड़े और हृदय के रोगों से बचाती है। इसे धारण करने-वाले के स्वभाव में सात्त्विकता का संचार होता है।

तुलसी की माला धारक के व्यक्तित्व को आकर्षक बनाती है । कलाई में तुलसी का गजरा पहनने से नब्ज नहीं छूटती, हाथ सुन्न नहीं होता, भुजाओं का बल बढ़ता है । तुलसी की जड़ें कमर में बाँधने से स्त्रियों को, विशेषतः गर्भवती स्त्रियों को लाभ होता है। प्रसव-वेदना कम होती है और प्रसूति भी सरलता से हो जाती है । कमर में तुलसी की करधनी पहनने से पक्षाघात नहीं होता, कमर, जिगर, तिल्ली, आमाशय और यौनांग के विकार नहीं होते हैं।

यदि तुलसी की लकड़ी से बनी हुई मालाओं से अलंकृत होकर मनुष्य देवताओं और पितरों के पूजनादि कार्य करे तो वह कोटि गुना फल देनेवाला होता है। जो मनुष्य तुलसी की लकड़ी से बनी हुई माला भगवान विष्णु को अर्पित करके पुनः प्रसाद रूप से उसे भक्तिपूर्वक धारण करता है, उसके पातक नष्ट हो जाते हैं ।

तुलसी दर्शन करने पर सारे पाप-समुदाय का नाश कर देती है, स्पर्श करने पर शरीर को पवित्र बनाती है, प्रणाम करने पर रोगों का निवारण करती है, जल से सींचने पर यमराज को भी भय पहुँचाती है, तुलसी लगाने पर भगवान के समीप ले जाती है और भगवद्-चरणों में चढ़ाने पर मोक्षरूपी फल प्रदान करती है। □

तुलसी-माला की महिमा

एक सत्य घटना

राजस्थान में जयपुर के पास एक इलाका है - लदाणा। पहले वह एक छोटी-सी रियासत थी। उसका राजा एक बार शाम के समय बैठा हुआ था। उसका एक मुसलमान नौकर किसी काम से वहाँ आया। राजा की दृष्टि अचानक उसके गले में पड़ी तुलसी की माला पर गयी। राजा ने चकित होकर पूछा :

''क्या बात है, क्या तू हिन्दू बन गया है ?''

''नहीं, हिन्दू नहीं बना हूँ।''

''तो फिर तुलसी की माला क्यों डाल रखी है ?''

''राजासाहब ! तुलसी की माला की बड़ी महिमा है।''

''क्या महिमा है ?''

''राजासाहब ! मैं आपको एक सत्य घटना सुनाता हूँ। एक बार मैं अपने ननिहाल जा रहा था। सूरज ढलने को था। इतने में मुझे दो छाया-पुरुष दिखाई दिये, जिनको हिन्दू लोग यमदूत बोलते हैं। उनकी डरावनी आकृति देखकर मैं घबरा गया। तब उन्होंने कहा :

'तेरी मौत नहीं है। अभी एक युवक किसान बैलगाड़ी भगाता-भगाता आयेगा। यह जो गड्ढा है उसमें उसकी बैलगाड़ी का पहिया फँसेगा और बैलों के कंधे पर रखा जुआ टूट जायेगा। बैलों को प्रेरित करके हम उद्दण्ड बनायेंगे, तब उनमें से जो दायीं ओर का बैल होगा, वह विशेष उद्दण्ड होकर युवक किसान के पेट में अपना सींग घुसा देगा और इसी निमित्त से उसकी मृत्यु हो जायेगी। हम उसीका जीवात्मा लेने आये हैं।'

राजासाहब ! खुदा की कसम, मैंने उन यमदूतों से हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि 'यह घटना देखने की मुझे इजाजत मिल जाय।' उन्होंने इजाजत दे दी और मैं दूर एक पेड़ के पीछे खड़ा हो गया। थोड़ी ही देर में उस कच्चे रास्ते से बैलगाड़ी दौड़ती हुई आयी और जैसा उन्होंने कहा था ठीक वैसे ही बैलगाड़ी को झटका लगा, बैल उत्तेजित हुए, युवक किसान उन पर नियंत्रण पाने में असफल रहा। बैल धक्का मारते-मारते उसे दूर ले गये और बुरी तरह से उसके पेट में सींग घुसेड़ दिया और वह मर गया।''

राजा : ''फिर क्या हुआ ?''

नौकर : ''हुजूर ! लड़के की मौत के बाद मैं पेड़ की ओट से बाहर आया और दूतों से पूछा : 'इसकी रूह (जीवात्मा) कहाँ है, कैसी है ?'

वे बोले : 'वह जीव हमारे हाथ नहीं आया। मृत्यु तो जिस निमित्त से थी, हुई किंतु वहाँ हुई जहाँ तुलसी का पौधा था। जहाँ तुलसी होती है वहाँ मृत्यु होने पर जीव भगवान श्रीहरि के धाम में जाता है। पार्षद आकर उसे ले जाते हैं।'

हुजूर ! तबसे मुझे ऐसा हुआ कि मरने के बाद मैं बिहिश्त में जाऊँगा कि दोजख में यह मुझे पता नहीं, इसलिए तुलसी की माला तो पहन लूँ ताकि कम-से-कम आपके भगवान नारायण के धाम में जाने का तो मौका मिल ही जायेगा और तभी से मैं तुलसी की माला पहनने लगा।''

कैसी दिव्य महिमा है तुलसी-माला धारण करने की ! इसीलिए हिन्दुओं में किसीका अंत समय उपस्थित होने पर उसके मुख में तुलसी का पत्ता और गंगाजल डाला जाता है, ताकि जीव की सद्गति हो जाय। ❑

महात्मा गांधी की सेवानिष्ठा

✽ महात्मा गांधी जयंती : २ अक्टूबर ✽

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

महात्मा गांधी के पास एक डॉक्टर सेवक था, जो कि विदेश होकर आया था। एक माई बड़ी बीमार थी, वह गांधीजी के पास आयी। गांधीजी ने उस डॉक्टर से कहा : ''इस गरीब माई को नीम की पत्तियाँ खिलाओ और छाछ पिलाओ, ठीक हो जायेगी।''

डॉक्टर उस माई को इलाज बताकर आ गया। दो-चार घंटे के बाद गांधीजी ने पूछा : ''उस माई को नीम की पत्तियाँ दीं ?''

डॉक्टर : ''जी ! ले ली होंगी उसने।''

गांधीजी : ''छाछ पिलायी ?''

डॉक्टर : ''हाँ ! पी होगी।''

गांधीजी : ''तो तू डॉक्टर काहे का बना ! पी होगी। वह माई गरीब है, उसने पी कि नहीं पी तुमने जाँच की ? डॉक्टर केवल नब्ज देखकर, दवा लिखकर आ जाय ऐसा नहीं होता। जब तक मरीज ठीक नहीं हो जाता तब तक उसे क्या-क्या तकलीफें हैं, उन्हें दूर करना इसकी जिम्मेदारी डॉक्टर की होती है।''

गांधीजी स्वयं उस गरीब महिला के पास गये और उससे पूछा : ''माताजी ! तुमने छाछ पी ?''

माई बोली : ''बापूजी ! पैसे नहीं हैं। एक गिलास छाछ के लिए एक पैसा तो चाहिए न ! वह कहाँ से लाऊँ ?''

उस माई की ऐसी गरीब हालत देखकर गांधीजी को बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने डॉक्टर को डाँटते हुए कहा : ''तू गाँव से माँगकर या अपने पैसे से खरीदकर एक प्याली छाछ नहीं पिला सकता था !''

गांधीजी ने उस माई को नीम की पत्ती खिलायी और छाछ पिलायी, जिससे वह एकदम ठीक हो गयी।

गरीबों के प्रति कितना प्रेम, अपनापन, दया व करुणा से भरा था गांधीजी का हृदय ! तभी तो आज करोड़ों हृदय उन्हें महात्मा के रूप में याद करते हैं।

महात्मा गांधी की सूझबूझ

एक दिन गांधीजी रेलगाड़ी से यात्रा कर रहे थे। बाहर का दृश्य बड़ा मनोरम था। वे दरवाजे के पास खड़े होकर भारत की प्राकृतिक सुषमा का अवलोकन कर रहे थे। उसी समय उनके एक पैर की चप्पल रेलगाड़ी से नीचे गिर गयी। गाड़ी तीव्र गति से अपनी मंजिल की तरफ भाग रही थी। गांधीजी ने बिना एक पल गँवाये दूसरे पैर की चप्पल भी नीचे फेंक दी। उनके साथी ने पूछा : ''आपने दूसरे पैर की चप्पल क्यों फेंक दी ?''

गांधीजी ने कहा : ''वह मेरे किस काम की थी ? मैं तो उसे पहन नहीं सकता था और नीचे गिरी चप्पल को पानेवाला भी उसका उपयोग न कर पाता। अब दोनों पैर की चप्पल पानेवाला ठीक से उपयोग तो कर सकता है !'' प्रश्नकर्ता इस परोपकारिता भरी सूझबूझ से प्रभावित और प्रसन्न हुआ। □

'बाल संस्कार केन्द्र' नयी दिशा की ओर...

देश-विदेश में चल रहे बाल संस्कार केन्द्रों का निम्नलिखित वर्गीकरण किया जा रहा है :

१. बाल संस्कार केन्द्र : ६ से ११ वर्ष तक के बच्चे-बच्चियाँ इन केन्द्रों में सम्मिलित होंगे ।

२. छात्र बाल संस्कार केन्द्र : ११ वर्ष से ऊपर के किशोर इन केन्द्रों में सम्मिलित होंगे ।

३. कन्या बाल संस्कार केन्द्र : इनमें ११ वर्ष से ऊपर की कन्याएँ सम्मिलित होंगी । इन केन्द्रों का संचालन साधिका बहनों द्वारा ही होगा ।

पूज्य बापूजी के 'आत्मसाक्षात्कार-दिवस' से सभी बाल संस्कार केन्द्रों के लिए यह नियम रहेगा ।

'ज्योत-से-ज्योत जगाओ अभियान' की सफल यात्रा

गुरुपूर्णिमा २००९ से गुरुपूर्णिमा २०१० तक ३३ समितियों ने १०८ नये केन्द्र खोलकर पूज्य बापूजी के करकमलों से स्वर्णपदक प्राप्त किये । इस अवधि में कुल ५,५५१ नये बाल संस्कार केन्द्र खुले । इस अभियान की अवधि उत्तरायण - २०११ तक बढ़ा दी गयी है ।

पहले डॉक्टर फिर आई.ए.एस. बनी

जब मैं ८वीं कक्षा में पढ़ती थी तभी मैंने पूज्य बापूजी से सारस्वत्य मंत्र की दीक्षा ली थी । नियमित मंत्रजप, ध्यान के साथ-साथ पूज्य बापूजी के द्वारा आयोजित विद्यार्थी शिविरों में भी मैं भाग लेती रही । सत्संग में पूज्य बापूजी के श्रीमुख से मैंने सुना : **'उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक उद्देश्य प्राप्त नहीं हो जाता । अनुशासन, तत्परता व बुद्धिमत्तापूर्ण प्रयास और आत्मविश्वास ही सफलता की कुंजी है ।'**

गुरुदेव के इन प्रभावशाली वचनों ने मेरे मन को उत्साह और उमंग से भर दिया । मुझे लगा कि मैं जो चाहूँ बन सकती हूँ, जीवन के हर क्षेत्र में अवश्य सफल हो सकती हूँ क्योंकि पूज्य बापूजी से प्राप्त सारस्वत्य मंत्र एवं उनकी कृपा हमारे साथ है । मैंने डॉक्टर बनने का उद्देश्य बनाया और बापूजी की कृपा से सहज में ही डॉक्टर (एम.बी.बी.एस.) बन भी गयी । अब भी मैं समय निकालकर बापूजी का सत्संग सुनती हूँ । सत्संग पर आधारित सत्साहित्य का अध्ययन करने से मुझे पीड़ित मानवता की सेवा करने की प्रेरणा हुई । मुझे लगा कि डॉक्टर बनने से मैं अधिक लोगों कि सेवा नहीं कर पाऊँगी । फिर मैंने आई.ए.एस. की परीक्षा दी । संयम, तत्परता, धैर्य एवं सफलता की कुंजी देनेवाले पूज्य बापूजी के आशीर्वाद से मेरा चयन भारतीय प्रशासनिक सेवा (I.A.S.) में हो गया है । अब तो पूज्य बापूजी के श्रीचरणों में मेरी यही विनती है कि आपकी कृपा से मैं समाज-सेवा का कार्य खूब अच्छी तरह से कर सकूँ । **– डॉ. प्रीति मीणा (I.A.S.), बारां (राज.)**

भोजन-पात्र विवेक

भोजन शुद्ध, पौष्टिक, हितकर व सात्त्विक बनाने के लिए हम आहार-व्यंजनों पर जितना ध्यान देते हैं उतना ही ध्यान हमें भोजन बनाने के बर्तनों पर भी देना आवश्यक है । अन्न-पदार्थ जिस बर्तन में पकाये जा रहे हैं उस बर्तन के गुण अथवा दोष उस आहार-द्रव्य में समाविष्ट हो जाते हैं । अतः किस प्रकार के बर्तनों में भोजन बनाना अथवा करना चाहिए इस पर भी शास्त्रों ने निर्देश दिये हैं ।

भोजन के समय खाने व पीने के पात्र अलग-अलग होने चाहिए । वे स्वच्छ, पवित्र व अखंड होने चाहिए। सोना, चाँदी, काँसा, पीतल, लोहा, काँच, पत्थर अथवा मिट्टी के बर्तनों में भोजन करने की पद्धति प्रचलित है । इसमें सुवर्णपात्र सर्वोत्तम तथा मिट्टी के पात्र हीनतम माने गये हैं। सोने के बाद चाँदी, काँसा, पीतल, लोहा और काँच के बर्तन क्रमशः हीन गुणवाले होते हैं ।

काँसे के पात्र बुद्धिवर्धक, स्वाद अर्थात् रुचि उत्पन्न करनेवाले हैं। अतः काँसे के पात्र में भोजन करना चाहिए। इससे बुद्धि का विकास होता है। उष्ण प्रकृतिवाले व्यक्ति तथा अम्लपित्त, रक्तपित्त, त्वचाविकार, यकृत व हृदयविकार से पीड़ित व्यक्तियों के लिए काँसे के पात्र स्वास्थ्यप्रद हैं । इससे पित्त का शमन व रक्त की शुद्धि होती है । परंतु 'स्कंद पुराण' के अनुसार चतुर्मास के दिनों में ताँबे व काँसे के पात्रों का उपयोग न करके अन्य धातुओं के पात्रों का उपयोग करना चाहिए। चतुर्मास में पलाश (ढाक) के पत्तों में या इनसे बनी पत्तलों में किया गया भोजन चान्द्रायण व्रत एवं एकादशी व्रत के समान पुण्य प्रदान करनेवाला माना गया है। इतना ही नहीं, पलाश के पत्तों में किया गया एक-एक बार का भोजन त्रिरात्र व्रत के समान पुण्यदायक और बड़े-बड़े पातकों का नाश करनेवाला बताया गया है । चतुर्मास में बड़ के पत्तों या पत्तल पर किया गया भोजन भी बहुत पुण्यदायी माना गया है ।

केला, पलाश या बड़ के पत्ते रुचि उत्पन्न करनेवाले, विषदोष का नाश करनेवाले तथा अग्नि को प्रदीप्त करनेवाले होते हैं। अतः इनका उपयोग हितावह है ।

लोहे की कड़ाही में सब्जी बनाना तथा लोहे के तवे पर रोटी सेंकना हितकारी है इससे रक्त की वृद्धि होती है। परंतु लोहे के बर्तन में भोजन नहीं करना चाहिए इससे बुद्धि का नाश होता है। स्टील के बर्तन में बुद्धिनाश का दोष नहीं माना जाता। पेय पदार्थ चाँदी के बर्तन में लेना हितकारी है लेकिन लस्सी आदि खट्टे पदार्थ न लें। पीतल के बर्तनों को कलई कराके ही उपयोग में लेना चाहिए ।

एल्यूमीनियम के बर्तनों का उपयोग कदापि न करें। वैज्ञानिकों के अनुसार एल्यूमीनियम धातु वायुमंडल से क्रिया करके एल्यूमीनियम ऑक्साइड बनाती है, जिससे इसके बर्तनों पर इस ऑक्साइड की पर्त जम जाती है। यह पाचनतंत्र, दिमाग और हृदय पर दुष्प्रभाव डालती है । इन बर्तनों में भोजन करने से मुँह में छाले, पेट का अल्सर, एपेन्डीसाईटिस, पथरी, अंतःस्रावी ग्रंथियों के रोग, हृदयरोग, दृष्टि की मंदता, माईग्रेन, जोड़ों का दर्द, सर्दी, बुखार, बुद्धि की मंदता, डिप्रेशन, सिरदर्द, दस्त, पक्षाघात आदि बीमारियाँ होने की

पूरी संभावना रहती है। एल्यूमीनियम के कुकर का उपयोग करनेवाले सावधान हो जायें।

आजकल भोजन पकाने के लिए माइक्रोवेव ओवन का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। इससे बने भोजन के घटकों में विकृति पैदा होती रहती है तथा भोजन में कैंसर पैदा करनेवाले कण पैदा हो जाते हैं। उस भोजन को खाये बिना भी मात्र उसके सम्पर्क में आने से भी शरीर पर कुप्रभाव पड़ता है। इन उपकरणों के ५०० मीटर की परिधि में आनेवाले जीव-जंतु तथा पेड़-पौधों की जीवनशक्ति का ह्रास होता है।

जलीय कणों में उछाल पैदा करके माइक्रोवेव शरीर के सिर से लेकर पैर के नाखूनों तक की सभी कोशिकाओं के जलीय वितरण में विकृति पैदा कर देती है, जिससे शरीर के सभी अंगों तथा तंत्रों में विकृति पैदा होती है। (मोबाइल फोन भी कान से ढाई से.मी. की दूरी पर रखा जाय।)

माइक्रोवेव ओवन से बने हुए भोजन का उपयोग करनेवाले को होनेवाली हानियाँ :

१. यादशक्ति की कमी
२. एकाग्रता में कमी
३. भावनात्मक अस्थिरता
४. बुद्धि की हानि होने की सम्भावना रहती है।

प्लास्टिक की थालियाँ (प्लेट्स) व चम्मच, पेपर प्लेट्स, थर्माकोल की प्लेट्स, सिल्वर फॉइल, पालीथिन बैग्ज आदि का उपयोग स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

पानी पीने के पात्र के विषय में 'भावप्रकाश' ग्रंथ में लिखा है कि पानी पीने के लिए ताँबा, स्फटिक या काँच-पात्र का उपयोग करना चाहिए। ताँबा तथा मिट्टी के जलपात्र पवित्र व शीतल होते हैं। टूटे-फूटे बर्तन से अथवा अंजलि से पानी नहीं पीना चाहिए। □

संस्था समाचार

('ऋषि प्रसाद' प्रतिनिधि)

२८ व २९ जुलाई को **अहमदाबाद** में एकांतवास के दौरान श्रद्धालु जनता की उपस्थिति बनी रही और ज्ञान-निर्झर बहता रहा। पूज्य बापूजी ने कहा : ''पूरे परमेश्वर को पाओ। प्रकृति परमेश्वर के एक हिस्से में है और प्रकृति के एक हिस्से में पंचमहाभूत। पंचमहाभूतों के एक हिस्से में तुम्हारी पृथ्वी है, पृथ्वी के एक हिस्से में तुम्हारा भारत और भारत के एक राज्य में तुम्हारा मकान, दुकान, गाँव, तहसील! वास्तव में तुम अनंत ब्रह्माण्डनायक ईश्वर के साथ अपना तादात्म्य करो तो तुम्हें लगेगा कि यह ब्रह्माण्ड ही नहीं, अनंत ब्रह्माण्ड बन-बन के मिट रहे हैं फिर भी मेरा कुछ बनता-बिगड़ता नहीं, मैं वह चैतन्य हूँ, चिद्घन हूँ।''

बापूजी ने जोधपुरवासियों की प्रार्थना पर १ **अगस्त** का सत्र **जोधपुर आश्रम** में दिया और यहीं से शुरू हुआ राजस्थान की धरा पर सत्संग-वर्षा का सिलसिला। पूज्य बापूजी के साथ ही मेघराजा ने भी लोकमांगल्य के इस दैवी आयोजन में अपनी सहमति दिखायी, अनुकूलता का परिचय दिया व अंतर को श्रद्धा, भक्ति, भगवद्भाव से समृद्ध करती पूज्यश्री की अमृतमयी ज्ञानवर्षा के साथ-साथ ही इन्द्रदेव की समृद्धिप्रदायक जलवर्षा का भी सिलसिला चलता रहा। राजस्थान के कई इलाके बारिश के अभाव में तरस रहे थे लेकिन जहाँ-जहाँ पूज्यश्री के चरण पड़े उन-उन इलाकों में अपनी अपार जलराशि के साथ मेघ बरसते गये।

मेघराजा व इन्द्रदेव ने ऐसी सुंदर सावधानी बरती कि एक तो सत्संग के पहले वर्षा हो और सत्संग के बाद वर्षा हो ऐसा सुंदर सहयोग सभी जगहों पर मिला। मानो प्रकृति और परमात्मा राजस्थानियों को स्नेह और दुलार करनेवाले बापूजी के इस लोकमांगल्य के महायज्ञ में साथ-साथ ही लगे रहे। जहाँ-जहाँ सत्संग हुआ वहाँ-वहाँ व आसपास के इलाकों में ऐसा तो पुण्यप्रताप बरसा कि पिछले ५ वर्षों में राजस्थान में ऐसी सुंदर वर्षा नहीं हुई जैसे इस बार खूब सत्संग-कार्यक्रम और खूब वर्षा हुई। १० वर्षों से खाली पड़े पाली के डेम में १२ फीट पानी भर गया और खूब छलका जवाई

बाँध ३२ फीट पानी के साथ ! **२ अगस्त को पाली (राज.)** के नवनिर्मित आश्रम में पूज्यश्री पधारे । वे घड़ियाँ पालीवालों के लिए सुवर्णघड़ियाँ थीं क्योंकि ब्रह्मनिष्ठ गुरुदेव के सत्संग के साथ ही इतने सालों का वर्षा का अभाव सत्संग के पुण्यप्रताप से मिटते हुए देखने का सौभाग्य भी इन्हें प्राप्त हुआ । बापूजी ने भी कहा : ''पुण्य कहो, सत्कर्म कहो, भगवान की कृपा कहो, अपना कोई सेवा का फल कहो, जिस दिन सत्संग मिला वे ऊँचे-में-ऊँची घड़ियाँ हैं ।''

४ अगस्त को **सुमेरपुरवासियों** को सत्संग का लाभ मिला । दुःख से बचने का उपाय बताते हुए बापूजी ने कहा : ''जीव दुःख से कैसे बचे ? लालच से प्रेरित होकर कर्म न करे, धर्म के अनुरूप कर्म करे । सुख लेने की इच्छा से कर्म करेगा तो राग होगा, सुख बाँट दे तो अंतरात्मा की शांति और संतोष पैदा होगा । सुख अपने आत्मा का होता है ।''

५ व ६ अगस्त को सूर्यनगरी **जोधपुर** की जनता को बापूजी के सत्संग का लाभ मिला । पूज्यश्री ने कहा : ''जिसको दुःखों से छूटना हो, रोग, शोक, अशांति से छूटना हो, जन्म, मृत्यु-जरा-व्याधियों के चक्कर से छूटना हो, सुख-शांति, माधुर्य और प्रभु को पाना हो उसको अपने जीवन में तीन बातों का आग्रह रखना चाहिए : भगवान के नाम का अर्थसहित जप, जप करते-करते भगवद्‌ध्यान व स्वाध्याय ।''

६ अगस्त को **पीपाड़** के दर्शनार्थियों की दर्शन-पिपासा पूरी करते हुए पूज्यश्री डुंगरिया आश्रम पहुँचे । **७ से ९ अगस्त तक** तीर्थराज **पुष्कर** में सत्संग-लाभ का सुवर्ण-अवसर आसपास की जनता को और तीर्थयात्रियों को प्राप्त हुआ । बापूजी बोले : ''**पासा पकड़ा प्रेम का, सारी किया सरीर ।** हम शरीर नहीं हैं, शरीर हमारा साधन है । इसका उपयोग करो । शरीर से मजा मत लो, सेवा करो । छोटों पर दया करो, बराबरीवालों से प्रेम करो, बड़ों का आदर करो । जो धर्म के रास्ते जाते हैं, उनके प्रति अहोभाव रखो । शरीर, मन का सदुपयोग करो, दुरुपयोग न करो तो प्रेम का पासा बिल्कुल पकड़ में आ जायेगा ।

पासा पकड़ा प्रेम का, सारी किया सरीर ।
सतगुरु दाव बताइया, खेलै दास कबीर ॥

सोमवती अमावस्या के दिन भी पूज्यश्री के सान्निध्य में जप-साधना का अवसर यहाँ के श्रद्धालुओं को मिला । भगवन्नाम-जप, गुरुमंत्र-जप की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए बापूजी ने कहा : ''भगवन्नाम-जप में अद्‌भुत शक्ति है और वह भगवन्नाम जब गुरुदीक्षा के द्वारा मिलता है तो चेतन हो जाता है । भगवान ने तो गीध, अजामिल, शबरी जैसे गिने-गिनायों को तारा लेकिन भगवान के नाम ने बेशुमार, अनगिनत खलों को तार दिया ।''

१० व ११ (सुबह) तक बाड़मेर में दूर-दराज से आये सत्संगियों को सम्बोधित करते हुए बापूजी ने कहा : ''आदमी कितना भी बड़ा हो, सत्संग के बिना उसका वह बड़प्पन टिकता नहीं है और अहंकार छोड़ो तो बड़प्पन मिटता नहीं है । तुम इधर कितने बड़े मकान में, कितनी बड़ी गाड़ी में, कितनी ज्यादा धन-दौलत में रहते हो इसका कोई महत्त्व नहीं है लेकिन मरने के बाद तुम्हारी दुर्गति होगी कि सद्‌गति होगी कि सत्स्वरूप ईश्वर को पाओगे - इस बात का महत्त्व है ।''

११ अगस्त (दोप.) को **आमेट** में सत्संग हुआ । आमेट में नये सत्संग-मंडप का उद्‌घाटन करने पहुँचे पूज्य बापूजी ने आते ही आमेटवासियों को चुप साधना से होनेवाले लाभों के बारे में बताते हुए कहा : ''**रात्रि को हम चुप होते हैं तो थकान मिटती है, समाधि में हम चुप होते हैं तो वासनाएँ और कर्म-बंधन मिटते हैं । माँ के गर्भ में चुप होते हैं तो हमारा शरीर विकसित होता है । जब हम चुप होते हैं तो परमात्मा की सत्ता काम करती है ।**''

पूज्य बापूजी आमेट से **नाथद्वारा** पहुँचे । **११ अगस्त (शाम)** को यहाँ सत्संग हुआ । पूज्यश्री ने यहाँ के भक्तों को धर्मयुक्त व्यवहार द्वारा परम शांति प्राप्त करने का सरल मार्ग बताया :

''मोह सकल ब्याधिन्ह कर मूला ।
तिन्ह ते पुनि उपजहिं बहु सूला ॥

आपका व्यवहार धर्मयुक्त होगा तो भक्ति दृढ़ होगी, सत्यस्वरूप परमात्मा के ज्ञान की जिज्ञासा होगी । **ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति । (गीता : ४.३९)** आधिदैविक, आधिभौतिक एवं आध्यात्मिक शांतियाँ तो आती-जाती हैं किंतु आत्मा-परमात्मा का ज्ञान गुरु की कुंजी के द्वारा मिल जाता है तो परम शांति मिल जाती है ।''

१२ से १३ अगस्त (सुबह) तक बड़ी संख्या में **कोटा** की जनता ने ब्रह्मनिष्ठ संतश्री के दर्शन-सत्संग

का खूब लाभ लिया । भौतिकता से लेकर आध्यात्मिकता तक जीवन के सभी स्तरों में विवेक का प्रकाश देनेवाला सत्संग पूज्य बापूजी से समाज को प्राप्त होता है। यहाँ भी उसीकी झलक देखने को मिली। पूज्यश्री बोले : ''फास्टफूड, डबल रोटी व बिस्किट बच्चों को देकर उनकी मूल्यवान जिंदगी को तुच्छ न बनायें। घर-गृहस्थी में ऐसे रहें कि घर-गृहस्थी में रहते हुए भी भगवान हमारे लिए सुलभ हो जायें।''

१३ अगस्त को एक ही दिन **बारां व सवाई माधोपुर** में सत्संग हुआ । धधकती धूप में इन आत्ममस्त, आत्मशांति में रमण करनेवाले संत का सत्संग सुनते हुए बारां का जनसमूह बारा तो क्या तेरा-ही-तेरा के पवित्र ज्ञान में ऐसा तो पावन हुआ कि दो-ढाई घंटे कहाँ बीत गये पता ही न चला ! और फिर सवाई माधोपुर ने तो सवाया रंग दिखाया। वहाँ पहली बार बापूजी गये पर सभीको चिर-परिचित से लगे । जनसैलाब तो ऐसा उमड़ा कि देखते ही बनता था । उनके बीच पहली बार पधारे प्रेममूर्ति, ज्ञानप्रकाश-प्रदाता बापूजी ने नेत्रों की ज्योति बढ़ाने के लिए निःशुल्क नेत्रबिंदु बँटवाये और शरीर-स्वास्थ्य के लिए 'हरड़ रसायन' का प्रसाद भी बाँटा । सभी जगह सत्संग की और इन वस्तुओं की प्रसादी बाँटते-बँटवाते पूज्यश्री संध्या को पहुँचे श्योपुर ।

१४ व १५ अगस्त (सुबह) को प्रेमभरा पर्व पाया **श्योपुर (म.प्र.)** वासियों ने, जिसमें कई न्यायाधीशों व समाज के अगुवाओं ने सत्संग-सरिता में स्नान किया। स्थावर तीर्थ में तो जाना पड़ता है लेकिन जंगम तीर्थस्वरूप बापूजी पधारे तो उनके सत्संग-तीर्थ में घर-बैठे डुबकी लगाने का अवसर मिला श्योपुर व आसपास के, दूर-दराज के प्रभु के प्यारों-गुरु के दुलारों को । वहाँ भी वही वर्षा का प्रसाद सत्संग के पहले व बाद में प्रभु ने बरसाया ।

१५ अगस्त को **श्योपुर** का सत्संग पूरा कर उसी दिन **झाँसी, मऊरानीपुर (उ.प्र.) छतरपुर (म.प्र.)** की जनता को भगवद्रस, भगवदीय मस्ती में झुमाया इन महापुरुष ने। **१६ व १७ (सुबह)** का सत्संग लम्बे समय से प्रतीक्षा कर रही **उरई (उ.प्र.)** की जनता को मिला । यहाँ की जनता की आध्यात्मिक समस्याओं के साथ ही भौतिक समस्याओं का भी समाधान करते हुए बापूजी ने कई उपाय बताये, कहा : ''माँ-बाप के होशियार होते हुए भी कभी-कभी उनके बच्चे बहुत भोले होते हैं । इसका कारण क्या ? जिन बच्चों को बचपन में गले में या नाभि से ऊपर के किसी अंग में चाँदी पहनायी जाती है, उनका विकास विपरीत होता है अथवा जो बच्चे अमावस्या या पूनम के दिन गर्भाधान करने से पैदा होते हैं, वे भी अविकसित मानसिकता या अविकसित शरीर के होते हैं।''

१७ (शाम) व १८ अगस्त (दोप.) को **ग्वालियर (म.प्र.)** में विराट जनमेदनी सत्संग में उमड़ी । दुःखदायी संसारी सुख से ऊपर उठकर चिन्मय सुख प्राप्त करने की प्रेरणा बापूजी के सत्संग से मिली : ''भगवान के जप-ध्यान, कीर्तन से जो सुख मिलता है, उसे चिन्मय सुख बोलते हैं । संसारी सुख तो धोखाधड़ी व पाप करवाता है किंतु जप-ध्यान, कीर्तन से जो सुख मिलता है वह धोखाधड़ी मिटाता है।''

१८ (शाम) व १९ अगस्त (सुबह) को **भरतपुर (राज.)** में हुए सत्संग में सत्संग की महत्ता बापूजी ने कुछ इस तरह समझायी : ''१४ साल का वनवास मिला तब भी भगवान श्रीरामजी सीताजी व लखन भैया को ऋषि भरद्वाज के आश्रम में सत्संग के लिए ले जाते हैं। १४ वर्ष के काल में श्रीरामचन्द्रजी उन्हीं ठिकानों पर ज्यादा रहते, जहाँ संतों का दर्शन-सत्संग मिलता रहता । सत्संग तो भगवान शिवजी को भी प्यारा है और भगवान रामजी को भी। भगवान श्रीकृष्ण ने तो कमाल ही कर दिया ! युद्ध के मैदान में पहले सत्संग हुआ है।'' पूज्य बापूजी ने संतों की महिमा का वर्णन करते हुए कहा : ''भगवान आम का वृक्ष हैं किंतु भगवान के प्यारे अनुभवी संत तो साक्षात् आम का फल हैं। आम का फल रसमय होता है और उसकी गुठली से दूसरे वृक्ष भी बन जाते हैं।''

१९ अगस्त को ही **बयाना व गंगापुर सिटी** में अपनी दिव्य वाणी की अमृतवर्षा बरसाते हुए पूज्यश्री **निवाई** पहुँचे । **१९ (शाम) व २० अगस्त** को निवाईवासियों को सत्संग-दीक्षा का लाभ मिला। **२२ अगस्त** को सत्संग का एक सत्र **जयपुर आश्रम** में हुआ और बड़ी संख्या में श्रद्धालु पूज्यश्री के दर्शनार्थ पहुँचे।

रक्षाबंधन, श्रावणी व नारियली पूनम का दर्शन-सत्संग महोत्सव **२२ से २४ अगस्त (सुबह)** तक **अहमदाबाद** में व **२४** की **दोपहर व शाम** को **रजोकरी (दिल्ली)** में सम्पन्न हुआ। पूनम व्रतधारी साधकों को

आत्मज्ञान की उँचाई पाने हेतु प्रेरित करते हुए बापूजी ने कहा : ''जो आत्मा-परमात्मा का ज्ञान छोड़कर दुनियादारी का ज्ञान पा-पाकर पेट भर के मर जाते हैं, उनका मनुष्य-जीवन व्यर्थ है। जिनको परमात्मप्राप्ति हुई है ऐसे महापुरुषों का सत्संग मिले, परमात्मप्राप्ति की रीति मिले तो व्यक्ति संसार में भी आसानी से सफल हो जाता है और परमात्मा को भी पा लेता है। **आत्मलाभात् परं लाभं न विद्यते । आत्मज्ञानात् परं ज्ञानं न विद्यते । आत्मसुखात् परं सुखं न विद्यते ।''**

पूज्यश्री ने सबको परम सुख, परम ज्ञान, परम लाभ की तरफ प्रोत्साहित किया : ''पृथ्वी का राज्य निष्कलंक मिल जाय, शरीर सुदृढ़ हो, पत्नी सुंदर व आज्ञाकारी हो - यह मानुषी सुख की पराकाष्ठा है। इससे सौ गुना सुख गंधर्वों को, उनसे सौ गुना देवताओं को और उनसे भी सौ गुना सुख देवराज इन्द्र को मिलता है। ऐसे इन्द्रदेव भी आत्मज्ञान, आत्मलाभ, आत्मसुख से सम्पन्न संतों के आगे अपने को बौना मानते हैं। ऐसा आत्मलाभ पाने के लिए, आत्मसुख पाने के लिए आपका जन्म हुआ है। लग जाओ, समय न गँवाओ।''

२८ (शाम) व २९ अगस्त (सुबह) तक **भिवाड़ी (राज.)** में हुए सत्संग में सनातन संस्कृति को अक्षुण्ण बताते हुए बापूजी ने कहा : ''रोम, यूनान, मिस्र और भारत - इन चारों की संस्कृतियाँ अतिप्राचीन हैं लेकिन तीन संस्कृतियों को धकेल दिया गया अजायब घरों में, अब केवल भारतीय संस्कृति की महक मौजूद है। उसको नष्ट करने के लिए लगे हैं पर भारतीय संस्कृति में अद्भुत क्षमता है... **मिट गये जहाँ से हमें मिटानेवाले।**

अयोध्या का नाम फैजाबाद, प्रयाग का नाम इलाहाबाद, हरिद्वार का हड्डीद्वार रखा गया और संस्कृति के स्तम्भ संत-महात्माओं व समाज के बीच खाई खोदने का प्रयास किया गया। वे खाई खोदनेवाले खोद-खोद के खप गये लेकिन जब तक संत इस धरती पर हैं, तब तक भारत की संस्कृति कभी लुप्त नहीं हो सकती, वह अक्षुण्ण रहेगी। अजायब घर में पहुँचानेवालों के सपने साकार नहीं हो सकते, मलिन मुरादें साकार नहीं हो सकतीं क्योंकि भारतीय संस्कृति मिटी तो मानवता की मधुरता मिट जायेगी। रोम, यूनान व मिस्र की संस्कृतियों की नाईं जो भारतीय संस्कृति को कुचलने में लगे हैं, वे उससे बाज आयें। भारतवासी संगठित रहें, सजाग रहें, अपनी प्यारी संस्कृति एवं संतों के प्रति सद्भाव-सम्पन्न हो जायें व उनकी मलिन मुरादें नाकामयाब कर दें।''

२९ अगस्त को **भिवाड़ी** के बाद **रेवाड़ी, नारनौल (हरि.) व अलवर (राज.)** में सत्संगी सत्संग-दर्शन प्राप्त कर धन्य-धन्य हुए। **३० अगस्त** को अलवर में कुत्ते-बिल्ली पालने के प्रचलन को शास्त्रीय ढंग से अनुचित बताते हुए शास्त्रों के मर्मज्ञ बापूजी ने कहा : ''कुत्ते-बिल्ली के पैर की धूल जिन घरों में रहती है, उन घरों में शांति, उदारता, धर्माचरण धीरे-धीरे क्षीण हो जाता है, महालक्ष्मी चली जाती है और वित्त आता है। **विताड़े ते वित्त...** दुःख-अशांति दे वह वित्त व सुख-शांति दे वह महालक्ष्मी। बड़े-बड़े अमीरों की बेचारों की क्या दुर्दशा है कि उनके यहाँ किसी साधु को भिक्षा नहीं मिलेगी। उन्हें 'कुत्ता काटता है'- यह बोर्ड दिखाया जायेगा और चौकीदार डंडा लेकर खड़ा है। किसी साधु या गरीब-मोहताज को अमीरों के घर पर हाथ फैलाने का अवसर भी चला गया। धिक्कार है उस अमीरी को, सत्ता को जिसके द्वारा अपने द्वार पर आये किसी गरीब के आँसू नहीं पोंछे जाते ! लानत है उनके धन व सत्ता को जिनके द्वारा किसीके दुःख नहीं मिटाये जाते !

मरना भला है उनका, जो जीते हैं खुद के लिए।
जीना भला है उनका, जो जीते हैं इंसान के लिए॥

धनभागी हैं वे !

३० (दोप.) को अलवरवासियों से विदाई ले **चौमूँ** पहुँचे बापूजी के प्रथम आगमन पर यहाँ की जनता ने अत्यंत भावभीना स्वागत किया। मात्र एक सत्र के कार्यक्रम में ही जनता का सैलाब उमड़ पड़ा। इनकी श्रद्धा व गुरुदीक्षा पाने की ललक को देखते हुए बापूजी ने इन्हें दीक्षा देकर कृतार्थ किया। चौमूँवासियों की भावपूर्ण विदाई के साथ ही राजस्थान के सत्संग महायज्ञ का समापन हुआ। सत्संग-यज्ञ के इस तूफानी दौर से राजस्थान में भक्ति की बाढ़-सी आ गयी थी। हर जगह विशाल जनमेदनी पूज्यश्री के दर्शनार्थ उमड़ी, कई-कई हजारों लोगों ने मंत्रदीक्षा लेकर सर्वांगीण विकास की कुंजियाँ पायीं व आध्यात्मिक यात्रा का श्रीगणेश किया। इन कार्यक्रमों में उमड़ते जनसैलाब से यह प्रतीत होता है कि पूज्यश्री द्वारा की जा रही इस आध्यात्मिक क्रांति का शंखनाद भारत के विश्वगुरु होने का मार्ग प्रशस्त कर रहा है। ❑

परम पूज्य संत श्री आसारामजी बापू

ज्योत-से-ज्योत जगाओ आगे बढ़ते जाओ...

– पूज्य बापूजी

१०८ नये 'बाल संस्कार केन्द्र' खुलवानेवाली समितियों के संस्कार सेवा प्रभारियों को गुरुपूर्णिमा के शुभ अवसर पर पूज्यश्री के करकमलों से स्वर्ण-पदक प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। इस अभियान की समयावधि उत्तरायण पर्व २०११ तक बढ़ा दी गयी है। अधिक जानकारी के लिए 'बाल संस्कार मुख्यालय' अहमदाबाद का संपर्क करें। फोन : (०७९) ३९८७७७४९.

पूज्यश्री के करकमलों से स्वर्ण-पदक पाते सौभाग्यशाली साधक

मालेगाँव (महा.)

भोर (पुणे, महा.)

भुवनेश्वर (उड़ीसा)

बड़ोदा (गुज.)

चेंबुर, कुर्ला, गोवंडी, मानखुर्द (मुंबई)

बाड़मेर (राज.)

दिल्ली (दक्षिण)

नोयडा (उ.प्र.)

जबलपुर (म.प्र.)

बोरीवली, मलाड, कांदिवली (मुंबई)

दौसा (राज.)

बरेली (उ.प्र.)

ऊना (हि.प्र.)

इनके अलावा आजमगढ़ (उ.प्र.), फरीदाबाद (हरि.), भिवाड़ी (राज.), प्रयागराज (उ.प्र.), फतेहपुर (उ.प्र.), गाजियाबाद (उ.प्र.), कंदरोड़ी (हि.प्र.), थाने-कलवा-मुलुंड (महा.), भायंदर-मीरा रोड-दहिसर (मुंबई), वसई-विरार-नालासोपारा (मुंबई), जलगाँव (महा.), पाटण (जि. सातारा, महा.) इन समितियों के प्रभारियों को भी पुरस्कृत किया गया।

RNP. No. GAMC 1132/2009-11
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2011)
WPP LIC No. CPMG/GJ/41/09-11
(Issued by CPMG GUJ. valid upto 31-12-2011)
RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2009-11
WPP LIC No. U (C)-232/2009-11
MH/MR-NW-57/2009-11
MR/TECH/WPP-21/NW/2010
'D' No. MR/TECH/47.4/2010

स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में 'युवा सेवा संघ' की 'देशभक्ति यात्राएँ'

प्रयागराज (उ.प्र.)

रायपुर (छत्तीसगढ़)

फरीदाबाद (हरि.)

हिसार (हरि.)

जालंधर (पंजाब)

कोलकाता (पश्चिम बंगाल)

भुवनेश्वर (उड़ीसा)
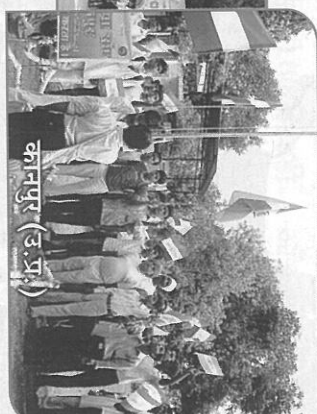
कानपुर (उ.प्र.)

बालोद (छत्तीसगढ़)

दिल्ली

नागपुर (महा.)

उल्हासनगर, जि. थाने (महा.)

इनके अलावा भिवानी (हरि.), देहरादून (उत्तराखंड), जयपुर, जोधपुर (राज.); भोपाल (म.प्र.); भावनगर (गुज.), पटना (बिहार); कटक (उड़ीसा); कल्याण (महा.); भिलाई, नंदिनीनगर जि. दुर्ग, बिलासपुर (छ.ग.) आदि अनेक-अनेक स्थानों में 'युवा सेवा संघ' द्वारा देशभक्ति यात्राएँ निकाली गयीं।

जो साधक भाई अपने क्षेत्र में 'युवा सेवा संघ' का गठन करना चाहते हों, वे युवा सेवा संघ मुख्यालय का अवश्य संपर्क करें। 'युवा सेवा संघ विभाग', संत श्री आसारामजी आश्रम, अहमदाबाद-5.
Ph: 079-39877761. e-mail: yss.sewa@gmail.com, yss_sewa@yahoo.com

Posting at PSO Ahmedabad between 1st to 17th of every month. * Posting at ND PSO on 5th & 6th of E.M. * Posting at MBI Patrika Channel on 9th & 10th of E.M.